Test Series Date 11 Nov. 2023 (Saturday) Question Paper

प्रश्न 1 : मध्य पाषाण कला (मेसोलिथिक कला) के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
कथन I: ये चित्रकाल (पेंटिंग) केवल बसे हुए आश्रयों में पाई गई हैं।
कथन II: ये चित्रकाल (पेंटिंग) ज्यादातर लाल और सफेद पिगमेंटो (रंगों) में बनाई जाती हैं।

उपर्युक्त के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है।
d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है।

सही उत्तर : (d)
व्याख्या :
कथन 1 गलत है : मध्यपाषाण काल का मनुष्य कला का प्रेमी था, यह मध्य भारत में विंध्य बलुआ पत्थर की पहाड़ियों के शैल आश्रयों में मिले कई हजार चित्रों से स्पष्ट है। ये चित्र बसे हुए और निर्जन दोनों आश्रयों में पाए गए हैं।
कथन 2 सही है : ये चित्र (पेंटिंग) अधिकांशतः लाल और सफेद पिगमेंटो में बनाई गयी हैं, जो चट्टानों और पृथ्वी में पाए जाने वाले पिंडों से बनी हैं।
अधिकतर इन चित्रों की विषयवस्तु जंगली जानवर और शिकार के दृश्य हैं, हालाँकि इनमें से कुछ मानव के सामाजिक और धार्मिक जीवन अर्थात, यौन क्रिया और बच्चे के जन्म से संबंधित हैं।
ये शैल कलाएँ शैल आश्रयों या प्राकृतिक गुफाओं में की गई पेंटिंग (पेट्रोग्राफ) और उत्कीर्णन (पेट्रोग्लिफ़) हैं।
भारत में भी, अधिकांश रॉक कला, विशेष रूप से चित्रकला और नक्काशी, मध्य पाषाण काल से अस्तित्व में हैं, जो नवपाषाण काल, लौह काल और प्रारंभिक ऐतिहासिक काल तक जारी रही।
यह कला न केवल उस समय के सांस्कृतिक जीवन को प्रतिबिंबित करती है, लेकिन यह आधुनिक चित्रों की तुलना में एक उत्कृष्ट सौंदर्य बोध को भी दर्शाती है।

प्रश्न 2: नवपाषाण काल के सांस्कृतिक विकास को नवपाषाण क्रांति कहा जाता है। निम्नलिखित में से कौन इस क्रांति का हिस्सा है :

a) पौधों और जानवरों को पालतू बनाने की शुरूआत।
b) बस्ती के पास बाड़ लगाना
c) अधिक भोजन के लिए मिट्टी के बर्तन बनाने का प्रचलन शुरू हुआ।
d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

पौधा लगाने और जानवरों को पालतू बनाने की शुरूआत के कारण बड़ी मात्रा में अनाज और पशु भोजन का उत्पादन हुआ।

जो भोजन वे उत्पादित करते थे उसे संग्रहित करना पड़ता था। इसलिए, मिट्टी के बर्तन बनाने की शुरुआत हुई।

उन्हें गुफाओं से दूर खुले इलाकों में बसना पड़ा, जिसके कारण इस प्रकार, के घर बनाए गए।

जिसके परिणामस्वरूप बड़े-बड़े गाँव विकसित हुए और वे वहाँ स्थायी निवास बन गए।

चूँकि मवेशियों और भेड़ों की सुरक्षा करनी होती थी इसलिए बस्तियों के आसपास बाड़ लगा दी जाती थी।

इन गतिविधियों से धीरे-धीरे खाद्यान की अधिकता और शिल्प विशेषज्ञता प्राप्त हुई।

खाद्यान सुरक्षा के कारण अधिक लोग गाँवों में बस पाए।

इसलिए, इस काल के सांस्कृतिक विकास को नवपाषाण क्रांति कहा जाता है।

प्रश्न 3: निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

(प्रागैतिहासिक काल)	(उपकरणों की विशिष्ट विशेषताएँ)
1. नवपाषाण काल	माइक्रोलिथ
2. मध्य पाषाण काल	पॉलिश किये गये पत्थर के औजार
3. पुरापाषाण काल	हाथ की कुल्हाड़ियाँ और बड़ा छुरा (क्लीवर)

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

प्रागैतिहासिक काल	विशिष्ट पत्थर के औजार
निम्न पुरापाषाण युग	• हाथ की कुल्हाड़ियाँ • काटने वाला चाकू(चॉपर) • बड़ा चाकू (क्लीवर) • खुरचनी • शल्क उपकरण • तक्षणी
मध्य पुरापाषाण काल	• शल्क उपकरण • पॉइंट • तक्षणी • खुरचनी • हाथ की कुल्हाड़ियाँ

उच्च पुरापाषाण काल	• चकमक पत्थर से बने ब्लेड और तक्षणी • खुरचनी (End scraper)
मध्यपाषाण युग	• लघु पाषाण उपकरण - छोटे, अधिकतर त्रिकोणीय, कुछ सेंटीमीटर आयाम वाले, तीरों के शीर्ष पर लगा हुआ।
नवपाषाण युग	• सेल्ट सहित पॉलिश किए गए पत्थर के उपकरण

प्रश्न 4 : निम्नलिखित में कौन-सा कथन बुर्जहोम नवपाषाण स्थल का वर्णन करते हैं :

1. यह कश्मीर घाटी में स्थित है।
2. बुर्जहोम के रहने वाले लोग कृषि और पशुपालन जैसी आजीविका गतिविधियों में संलग्न थे।
3. इस स्थल से विभिन्न प्रकार के हड्डी के उपकरण मिले हैं।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : कश्मीर घाटी, जहाँ बुर्जहोम (श्रीनगर से 20 किमी दूर) और गुफकराल जैसी महत्वपूर्ण नवपाषाणकालीन बस्तियों है, भारत में नवपाषाण काल को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

कथन 2 गलत है : कश्मीर में बुर्जहोम नवपाषाण स्थल को पॉलिश किए गए पत्थर के औजारों की खोज के आधार पर वर्गीकृत किया गया है, लेकिन इसका कोई प्रमाण नहीं मिला है कि यहाँ के निवासी कृषि या पशुपालन करते थे।

कथन 3 सही है : यहाँ हथियारों सहित बड़ी संख्या में हड्डी के उपकरण पाए गए हैं। बुर्जहोम की एक और अनूठी विशेषता कुत्तों को उनके मालिकों के साथ दफनाया जाना है।

प्रश्न 5 : समांतर चतुर्भुज प्रकार की बस्तियों का साक्ष्य निम्नलिखित में से किन स्थलों से मिलता है ?

a) हड़प्पा
b) कालीबंगा (कालीबंगन)
c) मोहनजोदड़ो
d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

हड़प्पा के किलेबंदी वाला नक्शा - समानांतर चतुर्भुज योजना - उल्लेखनीय रूप से कालीबंगा (कालीबंगन) के समान है। ऐसा प्रतीत होता है कि मोहनजोदड़ो का नक्शा भी इसी तरह का है, इस तथ्य के बावजूद कि बाढ़ के कटाव ने इससे संबंधित साक्ष्य को अस्पष्ट कर दिया है।
अलग-अलग टीलों पर फैले हड़प्पा और मोहनजोदड़ो (मोहनजो-दारो) के निचले शहर भी अलग-अलग रूप से किलेबंद प्रतीत होते हैं।
हालाँकि, कालीबंगा (कालीबंगन) का निचला शहर समांतर चतुर्भुज के आकार में किलेबंदी का स्पष्ट संकेत देता है।

प्रश्न 6: सिंधु घाटी सभ्यता के आर्थिक स्थिति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. हड़प्पा काल की जीवन निर्वाह प्रणाली में खाद्य उत्पादक अर्थव्यवस्था शामिल थी।
2. दलहन, तिलहन और रेशेदार पौधों की प्रधानता थी।
3. सिंधु नदी और उसकी सहायक नदियों के आने वाली वार्षिक बाढ़ इस क्षेत्र में उर्वरता का मुख्य स्रोत थी।
4. हड़प्पावासी प्रति वर्ष क्रमशः रबी और खरीफ मौसम में दो फसलों का उत्पादन करते थे।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : परिपक्व हड़प्पा काल की जीवन निर्वाह प्रणाली में खाद्य उत्पादक अर्थव्यवस्था शामिल थी जिसमें पौधों और पालतू जानवरों को शामिल किया गया था, जिसमें से कुछ शिकार, मछली पकड़ना और पौधों को इकट्ठा करना शामिल था।
कथन 2 गलत है : इस अवधि में हड़प्पावासी विभिन्न प्रकार के फसल की खेती करते थे। इस समय अनाज (गेहूँ, जौ और बाजरा) की प्रधानता थी। अन्य फसलों में फलियाँ (छीमी) या दालें (मटर, मसूर और चना), तिलहन और रेशेदार पौधे (अलसी, सरसों, तिल और कपास), और फल (तरबूज, खजूर और अंगूर) शामिल हैं।
कथन 3 सही है : हड़प्पा सभ्यता, एक शहरी सभ्यता होने के नाते, कृषि अधिशेष पर आधारित थी, जो शहरवासियों के भोजन के लिए आवश्यक था। इसलिए, उपजाऊ मिट्टी जीवन निर्वाह की कुंजी थी और सिंधु नदी में आने वाली वार्षिक बाढ़ मिट्टी की उर्वरता का मुख्य स्रोत थी।
कथन 4 गलत है : सुरक्षा के लिए बनाई गई पकी हुई ईंटों की दीवारें इस बात का संकेत देती हैं कि बाढ़ हर साल आती थी। इस क्षेत्र में काफी कम वर्षा कम होती है। चूँकि, उनकी कृषि सिंधु के बाढ़ के मैदानों में वार्षिक बाढ़ पर आधारित थी, इसलिए वे वर्ष में केवल एक बार ही खेती कर सकते थे। यहाँ पर रहने

वाले बाढ़ का पानी कम होने पर नवंबर के महीने में बुआई करते और बाढ़ के अगले दौर से पहले अप्रैल में फसल काट लेते थे।

प्रश्न 7 : हड़प्पा लिपि के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : इसे अभी तक समझा नहीं जा सका है।

कथन II : यह समकालीन पश्चिम एशियाई लिपि के साथ संबंध को दर्शाता है।

उपर्युक्त के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है ?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है कथन-II गलत है
d) कथन-I गलत है कथन-II सही है

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : संपूर्ण हड़प्पा लिपि की खोज की जा चुकी है, लेकिन इसे अभी तक इसे समझा नहीं जा सका है। इस प्रकार, हड़प्पा संस्कृति के कई पहलू हमारे लिए अज्ञात हैं। विद्वानों ने इसे द्रविड़ और प्राचीन द्रविड लिपि (प्रोटो-द्रविड़ियन लिपियों) से जोड़ने की कोशिश की है, लेकिन इससे आंशिक रूप में भी लिपि को समझने में मदद नहीं मिली है, क्योंकि यह एक वर्णमाला लिपि होने के बजाय एक चित्रात्मक लिपि है, जिसका प्रत्येक अक्षर/चित्र किसी ध्वनि, विचार या वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है।

कथन 2 गलत है : मिस्र और मेसोपोटामिया वासियों के विपरीत, हड़प्पावासियों ने लंबे शिलालेख नहीं लिखे। उनका अधिकांश लेखन मुहरों पर दर्ज था और इसमें केवल कुछ शब्द थे। हड़प्पा संस्कृति के कई अन्य अवयवों के जैसे, हड़प्पा लिपि भी स्वदेशी मूल की है और इसका पश्चिम एशिया की लिपियों से कोई संबंध नहीं है, जिन्हें विशेष रूप से पढ़ा जा चुका है।

प्रश्न 8: यजुर्वेद के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. राजसूय और वाजपेय के दो शाही अनुष्ठानों का उल्लेख पहली बार इसी वेद में किया गया है।
2. यह वेद केवल छंद रूप में है।
3. यह वेद कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद में विभाजित है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर **(b)**

व्याख्या :

कथन 1 सही है : पहली बार यजुर्वेद में राजसूय और वाजपेय नामक दो शाही अनुष्ठानों का उल्लेख किया गया है।

कथन 2 गलत है : ऋग्वेद और सामवेद, जो पूरी तरह से पद्य में हैं, के विपरीत यजुर्वेद पद्य और गद्य दोनों में है।

कथन 3 सही है : यह दो भागों अर्थात, कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद में विभाजित है।

पहला (कृष्ण) दोनों में पुराना है, और इसमें न केवल भजन बल्कि गद्य टिप्पणियाँ भी शामिल हैं।

दूसरे (शुक्ल) में केवल भजन शामिल हैं।

पहले वाले में चार संहिताएँ (कथक, कपिष्ठल-कथा, मैत्रायण और तैत्तिरीय संहिता) शामिल हैं, लेकिन दूसरे वाले में केवल वाजसनेयि संहिता हैं।

प्रश्न 9 : प्रारंभिक वैदिक काल के दौरान सामाजिक-आर्थिक विकास के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

a) कर्मकार को समाज में उच्च दर्जा प्राप्त था।
b) कर्मकारों ने रथ बनाए।
c) मुद्रीकरण अनुपस्थित था।
d) निजी संपत्ति की अवधारणा विकसित अवस्था में थी।

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

ऋग्वेद संहिता में कई शिल्पकारो जैसे तक्षण (बढ़ईगीरी), चर्मकार (चमड़े का काम करने वाला) और कर्मकार (धातु का काम करने वाला) आदि का उल्लेख है।

रथकार को समाज में उच्च दर्जा प्राप्त था क्योंकि वह युद्धों और लड़ाइयों में इस्तेमाल होने वाले रथ बनाते थे। ***अतः, विकल्प (a) और (b) गलत है।***

इस काल में व्यापार एवं वाणिज्य काफी कम विकसित थे। अर्थव्यवस्था का मुद्रीकरण देखने को नहीं मिला था, क्योंकि किसी भी धातु मुद्रा का कोई प्रमाण नहीं मिला है। सौदा वस्तु विनिमय प्रणाली के माध्यम से किया जाता था। ***अतः, विकल्प (c) सही है।***

निजी संपत्ति की अवधारणा अविकसित स्थिति में थी, अधिकांश संसाधन सामान्यतः ज्ञात थे। ***इसलिए, विकल्प (d) गलत है।***

प्रश्न 10 : उत्तर वैदिक काल में सभा और समिति की भूमिका के बारे में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही हैं ?

a) दोनों सभाओं की प्रासंगिकता समाप्त हो गई।
b) केवल सभा की अपनी प्रासंगिकता समाप्त हुई।
c) केवल समिति की अपनी प्रासंगिकता समाप्त हुई।
d) दोनों सभाएँ प्रारंभिक वैदिक काल की तरह ही जारी रहीं।

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

इस दौरान उत्तर वैदिक काल के समानतावादी और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण में कुछ कमी देखी गई, क्योंकि उत्तर वैदिक काल के दौरान विभिन्न राजनीतिक समूह उभरने लगे थे।

राजनीतिक इकाई के आकार में वृद्धि के कारण सभा और समिति में लोक-सम्मत प्रतिनिधित्व संभव नहीं रह गया है।

प्रश्न 11: उत्तर वैदिक काल में सामाजिक जीवन में परिवर्तन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: जनजातीय चरित्र में सामाजिक जीवन में कई सारे परिवर्तन देखे गए**।**

कथन II: समाज में समानतावादी, उदारवादी और प्रगतिशील दृष्टिकोण था।

उपर्युक्त के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।

b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।

c) कथन-I सही है कथन-II गलत है

d) कथन-I गलत है कथन-II सही है

सही उत्तर (c)

व्याख्या **:**

कथन I सही है : उत्तरवैदिक काल के ***जनजातियों में सामाजिक जीवन में कई सारे परिवर्तन*** **हुए** । इस अवधि को निरंतरता और परिवर्तन कालीन काल के रूप में चिह्नित किया गया था।

जहाँ एक ओर प्रारंभिक वैदिक काल की कई विशेषताएँ देखने को मिलती हैं, वहीं दूसरी ओर उत्तर वैदिक काल में भी कई नए तत्व सामने आते हैं।

उत्तरवैदिक काल के ग्रंथों में पाए गए संदर्भ उत्तरवैदिक काल के सामाजिक जीवन की प्रकृति और चरित्र पर प्रकाश डालते हैं।

इस अवधि के दौरान जनजातियों की संख्या के एकीकरण के कारण, समाज के जनजातीय चरित्र में कुछ गिरावट देखी गयी।

कथन II गलत है : समाज का समानतावादी, उदारवादी और प्रगतिशील दृष्टिकोण भी कुछ हद तक लुप्त हुआ क्योंकि बाद के वैदिक ग्रंथों में पाए गए संदर्भ में सामाजिक कठोरता को देखा जा सकता है।

प्रश्न 12 : निम्नलिखित कथनों पर **विचार कीजिए :**

1. जैन धर्म का मानना था कि त्रिरत्न और पंचमहाव्रत के पालन से निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
2. मोक्ष के लिए मठवासी जीवन आवश्यक नहीं है।
3. गृहस्थ अणुव्रत प्रथा का पालन करते थे।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : जैन धर्म का मानना था कि मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य आत्मा की शुद्धि और निर्वाण (मोक्ष) की प्राप्ति है, जिसका अर्थ जन्म और मृत्यु से मुक्ति है। इसे अनुष्ठानों और बलिदानों के माध्यम से नहीं बल्कि त्रिरत्न और पंचमहाव्रत के पालन से प्राप्त किया जा सकता है।

कथन 2 गलत है : निर्वाण प्राप्त करने के लिए, एक व्यक्ति को अपने कपड़ों सहित सभी बाधाओं को त्यागना होगा। केवल उपवास, आत्म-पीड़ा, अध्ययन और ध्यान के दीर्घकालिक कार्यप्रणाली से ही व्यक्ति खुद को कर्म से मुक्त कर सकता है। अतः मोक्ष के लिए संन्यासी जीवन आवश्यक है।

कथन 3 सही है : गृहस्थों से अपेक्षा की जाती थी कि वे भिक्षुओं की तुलना में इन गुणों के प्रथा के हल्के रूप, जिसे अणुव्रत (छोटे व्रत) कहा जाता है, का पालन करें।

इसलिए, कोई यह देख सकता है कि ब्राह्मणवाद एक अनुष्ठान-उन्मुख धर्म था, जबकि यह नया विश्वास आचरण-उन्मुख था।

प्रश्न 13 : वर्ण व्यवस्था पर महावीर के विचारों के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर **विचार कीजिए।**

1. महावीर ने वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की।
2. महावीर चांडाल में भी मानवीय मूल्यों की तलाश करते हैं।
3. उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को पहचाना लेकिन उन्हें जिन से नीचे रखा।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : महावीर ने बौद्ध धर्म की तरह वर्ण व्यवस्था की निंदा नहीं की।

महावीर के अनुसार, कोई भी व्यक्ति पिछले जन्म में अर्जित पापों या पुण्यों के परिणामस्वरूप उच्च या निम्न वर्ण में पैदा होता है।

कथन 2 सही है : महावीर एक चांडाल में भी मानवीय मूल्यों की अपेक्षा करते हैं। उनकी राय में शुद्ध मेधावी जीवन के माध्यम से निचली जातियों के सदस्य भी मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं।
कथन 3 सही है : महावीर ने ईश्वर के अस्तित्व को माना, लेकिन उन्हें जिन से नीचे रखा।
विश्व की रचना, पालन और विनाश किसी व्यक्तिगत ईश्वर द्वारा नहीं बल्कि एक सार्वभौमिक नियम द्वारा किया गया है।
महावीर सभी वस्तुओं, सजीव या निर्जीव, को चेतना की विभिन्न स्तरों से संपन्न मानते थे।
उनमें जीवन है और चोट लगने पर उनको दर्द होता है।

प्रश्न 14 : जैन परिषद के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. प्रथम परिषद् पाटलिपुत्र में आयोजित की गई थी।
2. प्रथम संगीति में संकलित ग्रंथों को केवल श्वेतांबरों ने ही स्वीकार किया।
3. द्वितीय संगीति वल्लभी में हुई थी।
4. द्वितीय संगीति की अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण ने की।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : स्थूलबाहु ने तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व की शुरुआत में पाटलिपुत्र में पहली जैन परिषद का आयोजन किया था।
कथन 2 सही है : इसके परिणामस्वरूप खोए हुए 14 पूर्वों (पूर्व ग्रंथों) को प्रतिस्थापित करने के लिए 12 अंगों (खंड या शाखा) का संकलन हुआ। श्वेतांबर जैन धर्म का एकमात्र प्रमुख संप्रदाय है, जो पाटलिपुत्र की पहली परिषद में संकलित ग्रंथों को स्वीकार करता है। अन्य प्रमुख संप्रदाय, दिगंबर, इन ग्रंथों को प्रामाणिक नहीं मानते हैं।
कथन 3 सही है : श्वेतांबरों ने पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में वल्लभी में दूसरी परिषद आयोजित की थी।
कथन 4 सही है : दूसरी परिषद की अध्यक्षता देवर्धि क्षमाश्रमण के नेतृत्व ने की थी। इसके परिणामस्वरूप 12 अंगों और 12 उपंगो (छोटे खंड) का अंतिम संकलन हुआ।

प्रश्न 15: अनेकांतवाद का सिद्धांत किसका संयोजन है :

a) स्यादवाद और नयावाद
b) सूर्यवाद और नयावाद
c) स्यादवाद और सूर्यवाद
d) योगाचार और सूर्यवाद

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

स्याद्वाद (हो सकता है का सिद्धांत) के अनुसार, भविष्यवाणी सात तरीके (सप्तभंगी) से संभव हैं।

नयवाद (दृष्टिकोण का सिद्धांत) स्यादवाद से निकटता से संबंधित है, जो ज्ञान या अध्ययन की सामग्री तक पहुँचने के सात तरीकों को दर्शाता है।

जैन धर्म के उपर्युक्त दोनों सिद्धांतों को अक्सर एक साथ अनेकांतवाद (बहुपक्षीयता का सिद्धांत) कहा जाता है।

प्रश्न 16 : महावीर की शिक्षाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. कर्म के कारण आत्मा बंधन की स्थिति में है।
2. कर्म शक्तियों का विघटन ही आत्मा की अंतिम मुक्ति है।
3. महावीर के अनुसार मोक्ष प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को बुरे कर्मों से बचना होगा।
4. महावीर ने वेदों की प्रामाणिकता को स्वीकार किया।

उपर्युक्त में से कितने कथन *गलत हैं* ?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : महावीर के अनुसार, कर्म (पिछले जन्मों में किए गए कार्यों के संचित प्रभाव) के कारण, आत्मा कई पिछले जन्मों से एकत्रित अनुरागों और इच्छाओं के माध्यम से निर्मित बंधन की स्थिति में है।

कथन 2 सही है : कई जन्मों तक निरंतर प्रयासों के माध्यम से ही आत्मा को बांधने वाली कर्म की शक्तियों का प्रतिकार किया जा सकता है और आत्मा को ही भावविहीन बना दिया जाता है। कर्म की शक्तियों का विघटन ही आत्मा की अंतिम मुक्ति है। गृहस्थ और निराश्रयी साधु दोनों के लिए एक निश्चित नैतिक संहिता निर्धारित की गई है।

कथन 3 सही है : चूँकि जीवन का उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है, इसलिए व्यक्ति को बुरे कर्मों से बचना होगा, और फिर धीरे-धीरे सभी प्रकार के नए कर्मों को रोकना होगा और मौजूदा कर्मों को कम करना होगा।

कथन 4 ग़लत है : उन्होंने वेदों की शक्ति को अस्वीकार करने के साथ-साथ वैदिक अनुष्ठानों और ब्राह्मण के वर्चस्व पर आपत्ति जताई। उन्होंने मोक्ष या सर्वोच्च आध्यात्मिक स्थिति की प्राप्ति के लिए एक बहुत ही पवित्र, नैतिक और उन्नत जीवन संहिता तथा कठोर तपस्या और सर्वोच्च आध्यात्मिक अवस्था पर जोर दिया।

प्रश्न 17 : निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

अर्ध-ऐतिहासिक कार्य	**लेखक**

1) प्रबंधचिंतामणि : राजशेखर
2) प्रबंधकोश : मेरुतुंगा
3) समरइच्चकहा : सिद्धर्षि
4) हरिवंशपुराण : जिनसेन

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

अर्ध-ऐतिहासिक जैन कृतियाँ जैसे मेरुतुंगा की प्रबन्धचिंतामणि (1306 ई.) और राजशेखर की प्रबन्धकोश (1349 ई.) महत्वपूर्ण हैं।

दिगंबरों ने शैलीओं को पुराण कहा, जैसे- पद्मचरित्र या विमलसूरी द्वारा रचित पद्मपुराण। जिनसेन ने हरिवंशपुराण लिखा, जो 783 ई. में पूरा हुआ।

जैनों ने कई प्रणय गद्य लिखा हैं, जैसे - हरिभद्र की समरइच्छकहा और सिद्धर्षि की उपमिति-भव-प्रपंच कथा (906 ईस्वी)।

प्रश्न 18: बुद्ध के जीवन से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों में शामिल थे। निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

1. अलारा कालामा : वह व्यक्ति, जिन्होंने उन्हें ध्यान की तकनीक सिखाई।
2. सुजाता : किसान की बेटी, जिसने उन्हें बोधगया में खीर खिलाया था।
3. कंथक : सारथी
4. चन्ना : उसका घोड़ा

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

बुद्ध के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण व्यक्तित्व :

चन्ना : सारथी

कंथक : उसका घोड़ा

अलारा कालामा : वह व्यक्ति, जिन्होंने उन्हें ध्यान की तकनीक सिखाई।

सुजाता : किसान की बेटी, जिसने उन्हें बोधगया में खीर खिलायी थी।

प्रश्न 19: निर्वाण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर **विचार कीजिए :**

1. निर्वाण का अर्थ सभी इच्छाओं का त्याग और कष्टों का अंत है ।
2. प्रार्थना और बलिदान से भी इच्छा समाप्त हो जाएगी।
3. निर्वाण का अर्थ शारीरिक मृत्यु नहीं है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

बुद्ध की शिक्षा का अंतिम लक्ष्य निर्वाण की प्राप्ति था। यह कोई जगह नहीं बल्कि एक अनुभव था तथा इसे इसी जीवन में हासिल किया जा सकता था।

कथन 1 सही है : निर्वाण का अर्थ सभी इच्छाओं का त्याग करना, और कष्टों का अंत है, जो अंततः पुनर्जन्म से मुक्ति की ओर ले जाता है। आकांक्षाओ को ख़त्म करने की प्रक्रिया से व्यक्ति निर्वाण प्राप्त कर सकता है। इसलिए, बुद्ध ने उपदेश दिया कि आकांक्षाओ का विनाश ही वास्तविक समस्या है।

कथन 2 गलत है : प्रार्थना और बलिदान से आकांक्षाएँ समाप्त नहीं होगी। इसलिए वैदिक धर्म में अनुष्ठानों और समारोहों पर जोर देने के बजाय उन्होंने व्यक्ति के नैतिक जीवन पर जोर दिया। ऐसा माना जाता है कि बुद्ध ने वैसा ही निर्वाण प्राप्त किया था, जैसा कि उनके कुछ शिष्यों ने किया था।

कथन 3 सही है : निर्वाण का शाब्दिक अर्थ निर्धमन, अन्तोन्मुखी, या विलोप - इच्छा, आसक्ति, लालच, घृणा, अज्ञान और मैं-पन की भावना का समाप्त होने के अलावा जन्म, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से बाहर निकलना हैं। निर्वाण का अर्थ शारीरिक मृत्यु नहीं है।

परिनिर्वाण (पूर्ण या अंतिम रूप से समाप्त होना) शब्द का प्रयोग बुद्ध जैसे प्रबुद्ध व्यक्ति की मृत्यु के लिए किया जाता है।

प्रश्न 20: बौद्ध संघ में शासन के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. संघ लोकतांत्रिक आधार पर शासित था।
2. महिलाओं को मतदान का अधिकार नहीं था।
3. बौद्ध भिक्षुणियाँ भिक्षुओं की देखरेख में रहती थीं।

4. भिक्षुणियों के लिए एक विशेष संहिता थी, जिसे भिक्खुणीपतिमोखा कहा जाता था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : संघ लोकतांत्रिक आधार पर शासित होता था और उसे अपने सदस्यों के बीच अनुशासन बनाए रखने का अधिकार था। इसमें गलती करने वाले सदस्यों को दंडित करने की भी शक्ति थी। कोई भी सभा तब तक मान्य नहीं थी जब तक कि कम से कम दस भिक्षु उपस्थित न हों, हालाँकि सीमावर्ती देशों में असाधारण मामलों में कोरम को घटाकर पाँच किया जा सकता था।

कथन 2 सही है : विनय पिटक के अनुसार, नौसिखियों और महिलाओं को बौद्ध संघ में मतदान या कोरम का हिस्सा बनने का अधिकार नहीं था। यह उस पितृसत्तात्मक समाज का प्रतिबिंब था जिसमें बौद्ध धर्म का उदय हुआ।

कथन 3 गलत है : बौद्ध भिक्षुणियाँ स्वतंत्र थीं तथा वे भिक्षुओं की देखरेख में नहीं रहती थीं। यह बौद्ध धर्म की एक अनूठी विशेषता थी, क्योंकि यह प्राचीन काल के कुछ धर्मों में से एक था जो महिलाओं को धार्मिक व्यवस्था में शामिल होने के साथ-साथ ब्रह्मचर्य और भक्ति का जीवन जीने की अनुमति देता था।

कथन 4 सही है : उनके पास "भिक्खुणीपतिमोखा" नामक एक विशेष पुस्तक थी, जिसमें एक भिक्षुणी को रहने का तरीका लिखा गया था। उन्होंने अपने दैनिक जीवन में इस पुस्तक की प्रक्रिया का पालन किया। "भिक्खुणीपतिमोखा" में 311 नियम हैं, जिन्हें आठ श्रेणियों में बाँटा गया है।

प्रश्न 21 : बौद्ध परिषद के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. दूसरी बौद्ध संगीति के परिणामस्वरूप अभिधम्म पिटक का संकलन हुआ।
2. तीसरी बौद्ध संगीति के परिणामस्वरूप बौद्ध धर्म हीनयानवादी और महायानवादी में विभाजित हो गया।
3. चौथी बौद्ध संगीति के परिणामस्वरूप महाविभाषा शास्त्र का संकलन हुआ।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : दूसरी बौद्ध संगीति 383 ईसा पूर्व में वैशाली के चुल्लवंगा में आयोजित हुई थी। इसकी अध्यक्षता कालाशोक के संरक्षण में सब्बाकामी ने की थी। इसका उद्देश्य वज्जि भिक्षुओं, जो कुछ अपरंपरागत संप्रदाय का पालन करते थे, के बीच विवाद को समाप्त करना था। इस परिषद का परिणाम यह हुआ कि वैशाली के भिक्षु संस्कारों में कुछ बदलाव चाहते थे, जिसके परिणामस्वरूप स्थविरवादियों और महासंघिकों में फूट पड़ गई।

कथन 2 सही है : तीसरी बौद्ध संगीति 250 ईसा पूर्व में अशोकाराम विहार, पाटलिपुत्र में आयोजित की गई थी। इसकी अध्यक्षता अशोक के संरक्षण में मोग्गलिपुत्त तिस्स ने किया थी। इसका उद्देश्य प्रतिद्वंद्वी के दावे से उत्पन्न विवाद का निपटारा करना था। इस परिषद का परिणाम यह हुआ कि इससे अभिधम्म पिटक का संकलन हुआ और दुनिया के विभिन्न हिस्सों में मिशनरियों को भेजने का निर्णय लिया गया।

कथन 3 सही है : चौथी बौद्ध परिषद 98 ईस्वी में कश्मीर के कुंडलवन में आयोजित की गई थी। इसकी अध्यक्षता कनिष्क के संरक्षण में वसुमित्र ने की थी। इसका उद्देश्य बौद्ध धर्म के सभी 18 संप्रदायों के बीच के मतभेद को दूर करना था। इस परिषद का परिणाम यह हुआ कि इससे महाविभाषा शास्त्र का संकलन हुआ और बौद्ध धर्म का हीनयानवादी और महायानवादी में विभाजन हुआ।

प्रश्न 22 : निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: सिकंदर के बाद उत्तर-पश्चिम में एक मजबूत यूनानी राज्य का गठन हुआ जो सदियों तक चला।

कथन II: सिकंदर ने उत्तर-पश्चिम में कुछ शहर स्थापित किये।

उपर्युक्त कथनों के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा एक सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है तथा कथन-II गलत है।
d) कथन-I गलत है तथा कथन-II सही है।

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

कथन 1 ग़लत है : सिकंदर के बाद, भारतीय उपमहाद्वीप का उत्तर-पश्चिमी भाग सिकंदर के सेनापति सेल्यूकस निकेटर के हाथों में आ गया। लेकिन, सेल्यूसिड साम्राज्य के उस क्षेत्र पर अधिक समय तक नियंत्रण नहीं रख सका और चंद्रगुप्त मौर्य ने उस पर कब्ज़ा कर लिया। दोनों के बीच वैवाहिक गठबंधन भी स्थापित हो गया। इसलिए, कथन 1 **गलत** है।

कथन 2 सही है: अलेक्जेंडर ने कई गैर-सैन्य मामलों में भी गहरी दिलचस्पी दिखाई। उसने अपनी लंबी यात्रा के दौरान कई शहरों की स्थापना की, जिनमें से कुछ शहर, जैसे कि काबुल क्षेत्र में अलेक्जेंड्रिया, झेलम पर बौकेफला और सिंध में अलेक्जेंड्रिया आदि, भारतीय उपमहाद्वीप में स्थापित किए गए।

प्रश्न 23. मौर्य शासन के पहले के काल के दौरान ग्राम प्रशासन के कामकाज के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: राजा गाँव की सारी ज़मीन का मालिक था।

कथन II: ग्राम प्रधान ग्रामीणों और राजा के बीच की कड़ी थे।

उपर्युक्त के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है
d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

उस समय तक अधिकांश लोग गाँवों में रहते थे, तथा इनमें पहले की तुलना में कोई खास बदलाव नहीं आया था।

चूँकि जनसंख्या बढ़ रही थी इसलिए उस समय अधिक गाँव विद्यमान थे।

गाँव सड़कों और रास्तों से, या नदियों के किनारे नावों द्वारा एक दूसरे से जुड़े हुए थे।

कथन 2 सही है : प्रत्येक गाँव का एक प्रधान होता था, जो गाँव के लोगों और राजा के लिए काम करता था और इसलिए वह राजा और किसानों के बीच का एक कड़ी था।

कथन 1 ग़लत है : राजा के पास कुछ गाँव और ज़मीनें थीं। इन जमीनों पर खेती करने के लिए मजदूरों को नियुक्त किया गया और उन्हें उनके काम के लिए मजदूरी दी गई।

प्रश्न 24 : मौर्य के दरबार में आने वाले विदेशी राजदूत के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में मेगस्थनीज आया था।
2. बिन्दुसार के दरबार में डाइमेकस आया था।
3. अशोक के दरबार में डायोनिसियस आया था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : सेल्यूकस ने पाटलिपुत्र के मौर्य शासक चंद्रगुप्त के दरबार में एक राजदूत **मेगस्थनीज** को भेजा था।
कथन 2 सही है : एंटीकस (सीरिया के राजा) द्वारा डाइमेकस को मौर्य शासक बिंदुसार दरबार में राजदूत के रूप में भेजा गया था।
कथन 3 सही है : मिस्र के शासक और अशोक के समकालीन टॉलेमी द्वितीय फिलाडेल्फ़स ने, जैसा कि प्लिनी द्वारा लिखा गया है, एक राजदूत डायोनिसियस को मौर्य दरबार में भेजा था।

प्रश्न 25 : मौर्य साम्राज्य की सीमा के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. धौली के प्रमुख शिलालेख से मौर्य साम्राज्य का पश्चिमी मोर्चे का पता चलता है।
2. सोपारा के प्रमुख शिलालेख से मौर्य साम्राज्य का पूर्वी मोर्चा का पता चलता है।
3. आंध्र-कर्नाटक क्षेत्र में लघु शिलालेख दक्षिण में मौर्य साम्राज्य की सीमा निर्धारित करते हैं।
4. केरलपुत्र और सथियापुत्र मौर्य साम्राज्य के एकमात्र दक्षिणी भाग थे।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (a)

व्याख्या :
निम्नलिखित साक्ष्य इस तथ्य को प्रमाणित करने में मदद करते हैं कि मौर्य साम्राज्य पश्चिमी क्षेत्र में दक्षिण गुजरात के सौराष्ट्र तक फैला हुआ था।
कथन 2 गलत है : बॉम्बे-सोपारा और गिरनार (जूनागढ़ जिला, गुजरात) के प्रमुख शिलालेख : रुद्रदमन का जूनागढ़ शिलालेख, जो सुदर्शन झील के नाम से ज्ञात जलाशय के निर्माण की शुरुआत का श्रेय चंद्रगुप्त के शासनकाल को देता है।
कथन 1 गलत है : पूर्वी मोर्चे पर, धौली (पुरी जिला) और जौगाड़ा (गंजम जिला) के प्रमुख शिलालेखों से पता चलता है कि मौर्य साम्राज्य की पूर्वी सीमा उड़ीसा तक फैली हुई थी।
कथन 3 सही है : एर्रगुडी (कुरनूल जिला) और सन्नाती (गुलबर्गा जिला) के प्रमुख शिलालेख दक्षिण भारत में मौर्य साम्राज्य की सीमा को निर्धारित करते हैं। आंध्र-कर्नाटक क्षेत्र में लघु शिलालेखों का ध्यान देने योग्य समूह, उदाहरण के लिए- मास्की, गविमठ, पालकीगुंडु, नित्तूर, ब्रह्मगिरि, आदि।
कथन 4 गलत है : इससे पता चलता है कि मौर्य साम्राज्य में दक्षिणी भागों को छोड़कर लगभग पूरा उपमहाद्वीप शामिल था, जो शिलालेख 2 के अनुसार, चोल, पांड्य, केरलपुत्र और सथियापुत्रों के निवास स्थान थे।

प्रश्न 26 : अशोक के प्रशासन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. प्रशासन का कार्य कई विभागों में विभाजित था, जिनमें से प्रत्येक का अपना प्रमुख होता था।

2. शहर का प्रशासन एक परिषद और छह बोर्डों द्वारा किया जाता था।
3. लोगों को धम्म का पालन करने के लिए प्रेरित करने के लिए धर्म-महामात्रों की नियुक्ति की गई।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

शासन से संबंधित अशोक के विचार उसके शिलालेखों में भी मिलते हैं। उनका मानना था कि एक राजा को अपनी प्रजा के साथ उसी तरह व्यवहार करना चाहिए जैसे एक पिता अपने बच्चों के साथ करता है।

अशोक ने राजधानी पाटलिपुत्र (पटना) से शासन किया। उनके पास सलाह देने के लिए एक मंत्रिपरिषद थी और उनके आदेशों का पालन करने वाले कई अधिकारी थे।

कथन 1 सही है : प्रशासन का कार्य कई विभागों में विभाजित था, जिनमें से प्रत्येक का पाटलिपुत्र में अपना प्रमुख या अधीक्षक था।

इस प्रकार राजा को हमेशा सूचित किया जाता था कि साम्राज्य के किस हिस्से में क्या हो रहा है।

कथन 2 सही है : शहर का प्रशासन एक परिषद और छह बोर्डों द्वारा किया जाता था, जिनके पास विभिन्न विभागों का प्रभार था।

कथन 3 सही है : इन अधिकारियों के अलावा, अशोक ने अधिकारियों का एक विशेष समूह बनाया था, जिन्हें धर्म-महामात्र कहा जाता है। ये अधिकारी देश भर में घूम-घूमकर स्थानीय कार्यों का निरीक्षण करते थे, लोगों की बातें सुनने के साथ-साथ उनकी शिकायतें सुनते थे और लोगों को धर्म का पालन करने तथा एक-दूसरे के साथ शांति से रहने के लिए मनाने की कोशिश करते थे।

प्रश्न 27 : अशोक स्तंभों के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. अशोक स्तंभ मुख्य रूप से मौर्य साम्राज्य के उत्तर भारत के हिस्सों में पाए जाते हैं, जिन पर स्तंभलेख उकेरे गए हैं।
2. स्तंभ के शीर्ष भाग पर बैल, शेर, हाथी आदि जैसी बड़ी आकृतियाँ उकेरी गई थीं।
3. स्तूपों और विहारों के निर्माण के साथ-साथ स्तंभों का निर्माण भी मौर्य शासकों द्वारा करवाया गया एक कलात्मक आविष्कार था।
4. अचमेनियन स्तंभों की तुलना में मौर्य स्तंभ चट्टानों को काटकर बनाए गए स्तंभ हैं, जिनका निर्माण एक राजमिस्त्री द्वारा टुकड़ों में किया गया था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन

d) सभी चार

सही उत्तर (C)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : पत्थर के स्तंभ अशोक द्वारा बनवाए गए थे, जो मौर्य साम्राज्य के उत्तर भारत के हिस्सों में पाए गए हैं और उन पर स्तंभलेख उकेरे गए थे।

कथन 2 सही है : स्तंभ के शीर्ष भाग पर बैल, शेर, हाथी आदि जैसी बड़ी आकृतियाँ उकेरी गई थीं। सभी बड़ी आकृतियाँ उत्कृष्ट हैं और एक चौकोर या गोलाकार शीर्ष फलक पर हैं। शीर्ष फलक को शैलीबद्ध कमलों से सजाया गया है।

कथन 3 गलत है : मौर्य काल के दौरान, स्तूपों और विहारों के अलावा, पत्थर के स्तंभों, चट्टानों को काटकर बनाई गई गुफाएँ और स्मारकीय आकृतियाँ कई स्थानों पर उकेरी हुई थीं। स्तंभों के निर्माण की परंपरा बहुत पुरानी है और यह देखा जा सकता है कि अचमेनियन साम्राज्य में भी स्तंभों का निर्माण प्रचलित था।

कथन 4 सही है : मौर्य स्तंभ अचमेनियन स्तंभों से भिन्न हैं। मौर्य स्तंभ चट्टानों को काटकर बनाए गए स्तंभ हैं, जो नक्काशी करने वाले के कौशल को प्रदर्शित करते हैं, जबकि अचमेनियन स्तंभों का निर्माण एक राजमिस्त्री द्वारा टुकड़ों में किया गया है।

प्रश्न 28 : मौर्य काल के दौरान प्रचलित लोकायत दर्शन के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. इस दर्शन का विचार केवल वेदों में ही निहित है।
2. लोकायत के अनुयायी केवल उत्तरी हिस्से से संबंधित थे।
3. लोकायत का उल्लेख पतंजलि के महाभाष्य में भी है।
4. लोकायत के अनुयायी ब्राह्मणवादी प्रवृत्ति के थे।

उपर्युक्त में से कितने कथन ***गलत*** हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 गलत है : मौर्य काल के दौरान, मुख्य रूप से प्राचीन भारत के प्रमुख भौतिकवादी संप्रदाय लोकायत को आकार देने से दार्शनिक ज्ञान में काफी वृद्धि हुई थी। वेदों में निहित प्राकृतिक दर्शन के विचार इसके स्रोतों में से एक थे। उपनिषदों में कुछ पद्य हैं, जो लोकायत के विचारों का पूर्वानुमान लगाते हैं।

कथन 2 गलत है : प्रारंभिक काल में, लोकायत एक व्यापक शिक्षा थी। उपनिषदों में लोकायत शिक्षण के समान उपदेश शामिल थे। इस दर्शनशास्त्र का उल्लेख बौद्ध और जैन स्रोतों में भी मिलता है। लोकायत के अनुयायी देश के उत्तर और दक्षिण दोनों जगह से संबंधित थे।

कथन 3 सही है : कौटिल्य लोकायत को दर्शन के तीन संप्रदायों में रखते हैं जिनके बारे में उनका मानना है कि उनका वास्तविक मूल्य है। लोकायत का उल्लेख अन्य प्राचीन भारतीय ग्रंथों, जैसे, पतंजलि के महाभाष्य में भी किया गया है।

कथन 4 गलत है: लोकायत के अनुयायियों में ब्राह्मण विरोधी प्रवृत्ति थी। वे पुरोहित अभिजात वर्ग और उनके द्वारा प्रतिपादित विचारधारा के विरोधी थे।

प्रश्न 29 : मौर्य काल के दौरान वैश्यों की सामाजिक स्थिति के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. इस काल में वैश्यों की स्थिति ख़राब हो गयी।
2. उन्होंने शहरी संस्थानों को नियंत्रित किया।
3. कौटिल्य के अनुसार, आपातकाल के समय भी वैश्यों को सेना में भर्ती नहीं किया जाता था।
4. मौर्य काल में वैश्यों को उच्च सरकारी पदों पर भर्ती किया जाता था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

कथन 1 ग़लत है : मौर्य काल के दौरान, देश के आर्थिक विकास के कारण, वैश्यों की स्थिति में सुधार हुआ। सुधार के बाद उस समय वैश्यों की स्थिति ब्राह्मणों और क्षत्रियों जैसी होने लगी थी।

कथन 2 सही है : अपने व्यापार संघों के माध्यम से, वैश्य अक्सर शहरी संस्थानों को नियंत्रित करते थे। चूँकि उन्हें उस प्रतिष्ठित पद से वंचित कर दिया गया, जिसके वे हकदार थे, उनमें आक्रोश था और उन्होंने बौद्ध और जैन धर्म का समर्थन किया।

अधिकांश वैश्य कृषि और शिल्प से संबंधित थे। वे करदाताओं के बड़े हिस्से का प्रतिनिधित्व करते थे। हालाँकि, वैश्यों के बर्बाद होने कई संदर्भ मिलते हैं, जिसके कारण उन्हें निम्न स्तर के व्यवसाय को अपनाना पड़ा, जो शूद्रों के स्तर के हैं।

कथन 3 गलत है : कौटिल्य वैश्यों और शूद्रों से सैनिकों की भर्ती का उल्लेख करते है, लेकिन उन्हें आपातकाल के समय में किया गया था।

कथन 4 गलत है : इसकी पूरी संभावना है कि वैश्य और शूद्र पूर्ण योद्धा नहीं थे, लेकिन सेना में कुछ सहायक कार्य करते थे। वैश्य उच्च सरकारी पदों पर भी नहीं थे।

प्रश्न 30: मौर्य काल के दौरान महिलाओं की स्थिति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. इस काल में प्रचलित किसी भी सम्प्रदाय में महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी।

2. गणिकाओं या वैश्याओं की सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं थी।
3. सती प्रथा मौर्य समाज में प्रचलित थी।
4. मौर्य समाज में विधवा पुनर्विवाह और तलाक को प्रोत्साहित किया जाता था।

उपर्युक्त में से कितने कथन गलत हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (D)
व्याख्या :
कथन 1 गलत है : मौर्य काल के दौरान महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी। हिंदू धर्म और जैन धर्म की तुलना में, बौद्ध धर्म ने महिलाओं को बेहतर दर्जा दिया, जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में महिलाएँ नन बन गईं।
कथन 2 गलत है : गणिकाओं या वेश्याओं को अच्छी सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। वेश्याओं की देखभाल के लिए एक अधीक्षक होता था। उन्हें राज्य द्वारा जासूस के रूप में नियुक्त किया गया था।
कथन 3 गलत है : सती प्रथा उत्तर-पश्चिम में कुछ स्थानों पर प्रचलित थी, लेकिन यह भारत के किसी भी हिस्से में सामान्य प्रथा नहीं थी।
कथन 4 गलत है : एक ही बार विवाह करने की प्रथा (एक विवाह) का नियम था, लेकिन अमीर और शासक वर्ग के पुरुषों ने कई शादियाँ करना शुरू कर दिया था। महिलाओं की शारीरिक शुद्धता को महत्व देने के साथ-साथ विधवा पुनर्विवाह और तलाक को हतोत्साहित किया गया था। हिंदुओं में स्त्री की हत्या को ब्राह्मण की हत्या के बराबर माना जाता था। सामान्यतः, महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी।

प्रश्न 31: पूर्व मौर्य काल के दौरान ग्राम प्रशासन के कामकाज के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
कथन I : स्तूप, विहार और चैत्य बौद्ध और जैन मठ परिसरों का हिस्सा हैं, लेकिन सबसे बड़ी संख्या बौद्ध धर्म की है।
कथन II: अशोक के समय बना साँची का विशाल स्तूप ईंटों से बनाया गया था और बाद में इसे पत्थरों से आवृत कर दिया गया।
उपर्युक्त के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है
d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : स्तूप, विहार और चैत्य बौद्ध और जैन मठ परिसरों का हिस्सा हैं, लेकिन इसकी सबसे बड़ी संख्या बौद्ध धर्म की है। तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में स्तूप की संरचना का एक उदाहरण राजस्थान के बैराट में मिलता है।

स्तूप अर्धगोलाकार टीले के रूप में हैं, जिनमें बुद्ध या अन्य बौद्ध संतों के अवशेष हैं। इन्हें अक्सर मूर्तियों और उभड़ी हुई नक्काशियों से सजाया जाता है, जो बौद्ध कहानियों और प्रतीकों को दर्शाते हैं।

विहार वे मठ हैं, जहाँ बौद्ध भिक्षु रहते हैं और अध्ययन करते हैं। आमतौर पर, इनमें कोशिकाओं से घिरा एक केंद्रीय प्रांगण, एक भोजनालय और एक ध्यान कक्ष होता है।

चैत्य बौद्ध धर्म में एक प्रार्थना कक्ष होता हैं। वे आम तौर पर एक गुंबददार छत और एक छोर पर एक बड़े एपीएसई के साथ आयताकार आकार के होते हैं। एप्स (मेहराब) में आमतौर पर बुद्ध की एक मूर्ति होती है।

कथन 2 सही है : साँची का महान स्तूप मूलतः तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में सम्राट अशोक के समय ईंटों से बनाया गया था। बाद में दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में शुंग राजवंश के शासनकाल के दौरान इसका विस्तार किया गया और इसे पत्थर से आवृत कर दिया गया।

स्तूप एक अर्धगोलाकार टीला है, जिसमें बुद्ध धर्म की पुरानी निशानियाँ हैं। यह भारत की सबसे पुरानी पत्थर संरचनाओं में से एक है और बौद्ध वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण स्मारक है। स्तूप एक परिक्रमा पथ और चार विस्तृत नक्काशीदार प्रवेश द्वारों से घिरा हुआ है।

प्रश्न 32 : सेंट थॉमस ने किसके दरबार का दौरा किया था :

a) माउस
b) अज़ाज़
c) गोण्डोफर्नीज
d) ऐजीलिसस

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

प्रसिद्ध पार्थियन शासक गोंडोफर्नेस का नाम सेंट थॉमस से जुड़ा हुआ माना जाता है।

यह एक परिपाटी है, जो बताती है कि सेंट थॉमस इज़राइल से यात्रा करके गोंडोफर्निस के दरबार में आए थे।

वे ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए भारत आये थे।

प्रश्न 33 : इनमें से किसके द्वारा "देवीपुत्र" की अवधारणा शुरू की गई थी ?

a) कुषाण
b) सातवाहन
c) शक
d) इंडो-ग्रीक

सही उत्तर (A)

व्याख्या :

यद्यपि कुषाण विदेशी थे, परन्तु कालान्तर में उन्होंने भारतीय पद्धति अपना ली।
उन्होंने भारत में महाराजाधिराज और देविपुत्र की नई अवधारणा पेश की।

प्रश्न 34 : निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. सातवाहन समाज में वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी।
2. सातवाहन समाज में प्रचलित जाति व्यवस्था जन्म पर आधारित थी।
3. ब्राह्मणों को वैदिक धर्म का प्रतीक माना जाता था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : सातवाहन समाज में वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। सातवाहनों के समय चार वर्ण थे। समाज के चार वर्णों अर्थात्; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र स्पष्ट थे।

कथन 2 गलत है : इस अवधि के दौरान जाति व्यवस्था ने भी अपना आकार लेना शुरू कर दिया है। लोगों द्वारा किये गये कार्यों के आधार पर जाति व्यवस्था का उदय हुआ। अत: स्पष्ट है कि विभाजन मुख्यतः कार्य पर आधारित था।

कथन 3 सही है : सातवाहन वंश के राजा ब्राह्मणों का सम्मान करते थे और उन्हें वैदिक धर्म के प्रतीक के रूप में मानते थे। ब्राह्मण वैदिक धर्मों से शिक्षा प्राप्त करते थे और समाज में कर्मकाण्ड आदि का पालन करते थे, यह जानकारी नानाघाट के शिलालेख से स्पष्ट होती है। उनके शासन काल में राजाओं द्वारा ब्राह्मणों को कर-मुक्त गाँव दान में दिये जाते थे।

प्रश्न 35 : मनु द्वारा वर्णित मौर्योत्तर काल की सामाजिक स्थिति के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. मिश्रित जातियाँ कभी-कभी व्यावसायिक समूह होती थीं।
2. ब्राह्मण के वैश्य स्त्री से विवाह के बाद उत्पन्न होने वाली संतान को निषाद की श्रेणी में रखा जाता है।
3. ब्राह्मण के शूद्र स्त्री से विवाह के बाद उत्पन्न होने वाली संतान को अम्बष्ठ कहा जाता है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक

b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : मनु जैसे मानक धर्मशास्त्र में मिश्रित जातियाँ कभी-कभी व्यावसायिक समूह हुआ करती थीं, लेकिन आम तौर पर इसमें वे जनजातियाँ शामिल थीं जो स्पष्ट रूप से आर्य समाज में आसानी से समाहित नहीं होती थीं।

कथन 2 गलत है : इसमें दिलचस्प बात यह है कि ये जनजातीय नाम प्रारंभिक मध्ययुगीन काल तक अलग-अलग पहचान के साथ मौजूद रहे, जैसा कि बाद के पुराणों में वर्णित जातीय समूहों के साथ मनु स्मृति में सूचियों की तुलना से स्पष्ट हुआ है। इस प्रकार, हम इस बात से अवगत है कि एक ब्राह्मण एक वैश्य महिला से शादी करके बच्चे पैदा करता है, जिन्हें अंबष्ठ के रूप में वर्गीकृत किया जाता है; बाद के पुराणों में अंबष्ठ जनजाति का उल्लेख अनावा क्षत्रियों के रूप में हुआ है, इनकी जनजातीय पहचान यथावत है।

कथन 3 गलत है : इसी तरह, एक ब्राह्मण ने एक शूद्र महिला से शादी की जिसके परिणामस्वरूप निषाद हुआ, जो वास्तव में एक मूल जनजाति प्रतीत होती है। जाहिर तौर पर जिन जनजातियों को आत्मसात नहीं किया गया था, उन्हें व्यवस्था में एक औपचारिक का दर्जा दिया जाना था और इस प्रकार मिश्रित जातियों के सिद्धांत पर काम किया गया।

प्रश्न 36 : मौर्योत्तर काल में प्रचलित विवाहों के प्रकारों के संबंध में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: नियोग का पालन केवल निम्न वर्णों में किया जाता था।

कथन II: महाकाव्य काल में हमारे पास नियोग को किसी विशेष वर्ण तक सीमित रखने वाला कोई विनियमन नहीं है।

उपर्युक्त के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है।
d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है।

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : नियोग (लेविरेट) निश्चित रूप से ईसाई युग की प्रारंभिक शताब्दियों में शूद्रों में प्रचलित था, जो तथ्य निम्न वर्णों के बीच विधवा पुनर्विवाह के अस्तित्व के बारे में हमारी धारणा को मजबूत करता है।

कथन 2 सही है : वैदिक और महाकाव्य काल में, हमारे पास नियोग को किसी विशेष वर्ण तक सीमित रखने वाला कोई विनियमन नहीं है, हालाँकि इन अवधियों के दौरान इस प्रथा के अधिकांश उदाहरण क्षत्रिय राजकुमारियों और कभी-कभी ब्राह्मणों से संबंधित हैं। हालाँकि, बाद के समय में, स्मृतियों ने इस प्रथा को केवल शूद्रों तक ही सीमित रखा।

प्रश्न 37 : मौर्योत्तर काल के दौरान धार्मिक स्थिति के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. महायान ने योग के हिंदू विचार का पालन नहीं किया।
2. महायानवाद बुद्ध की दिव्यता में विश्वास करता था।
3. जातक कथाओं में बोधिसत्वों का कोई उल्लेख नहीं है।
4. हीनयान कई संस्कारों और अनुष्ठानों के अलावा संतों की पूजा वाला एक संप्रदाय था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

कथन 2 सही है : बोधिसत्व के सिद्धांत ने इस विश्वास को जन्म दिया कि प्रत्येक व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करने में मनुष्य की सहायता करने के लिए बुद्धत्व का लक्ष्य रख सकता है या यहाँ तक कि आगे बढ़ सकता है। महायानवाद बुद्ध की दिव्यता, प्रार्थना, आस्था और व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के प्रति समर्पण की प्रभावशीलता में विश्वास करता था।

कथन 1 ग़लत है : महायान ने योग के हिंदू विचार का पालन करना शुरू किया। हालाँकि हीनयानवाद अप्रगतिशील, उदासीन, निष्क्रिय और नीरस था, जबकि महायानवाद एक सघन जीवित और सक्रिय आस्था थी, जो कि इसने पुराने बौद्ध धर्म में एक नया जीवन का संचार किया, जिसने इसे मध्य एशिया, चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा और सुदूर पूर्व में विस्तार में मदद की।

कथन 3 गलत है : बोधिसत्व में वे धर्मात्मा व्यक्ति शामिल थे, जो बुद्ध से पहले पृथ्वी पर रहते थे। जातक कथाओं में बोधिसत्वों के बारे में कई कहानियाँ हैं।

बौद्ध धर्म अब तक काफ़ी बदल चुका था। अब यह वह सरल धर्म नहीं रहा, जो बुद्ध ने सिखाया था।

उस समय दो संप्रदाय अर्थात, महायान और हीनयान थे।

कथन 4 गलत है : महायान कई संस्कारों और अनुष्ठानों के साथ-साथ संतों की पूजा वाला एक संप्रदाय था। इसके भिक्षु प्रभावशाली थे। लेकिन भारत में अभी भी ऐसे लोग है जो इस प्रकार के बौद्ध धर्म को स्वीकार नहीं करते थे। उन्हें हीनयान बौद्ध कहा जाता है।

महायान बौद्धों ने चीन जाने वाले भारतीय व्यापारियों के साथ चीन में मिशनरियों को भेजा।

जल्द ही, बौद्ध धर्म पूरे मध्य एशिया और चीन में फैल गया।

प्रश्न 38 : मौर्योत्तर काल के दौरान प्रचलित धार्मिक प्रथा के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: व्यूह पंथ का सबसे पहला सिद्धांत विष्णुपुराण में मिलता है।

कथन II: व्यूहवाद में अंतर्निहित विचारधारा मुख्य रूप से शुद्ध-सृजन या शुद्ध-सृष्टि के विषय पर केंद्रित थी।

उपर्युक्त के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है।
d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है।

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

कथन 1 गलत है : भागवत पंथ के अधिकांश सिद्धांतों का पता भगवत गीता से जा सकता है, जो हमें एकांतिक धर्म की पहली व्यवस्थित व्याख्या प्रदान करता है। यह कृष्ण वासुदेव पर केंद्रित है, बाद में, व्यूह पंथ को भागवत पंथ में पेश किया गया था।

कथन 2 सही है : व्यूह पंथ का सबसे पहला सिद्धांत ब्रह्मसूत्र में मिलता है। बाद में, पतंजलि ने भी इसका विस्तार से उल्लेख किया है। व्यूहवाद में अंतर्निहित विचारधारा मुख्य रूप से शुद्ध-सृजन या शुद्ध-सृष्टि के विषय पर केंद्रित थी। दूसरे शब्दों में, इसका अर्थ है 6 आदर्श गुणों का निर्माण। जो हैं : ज्ञान, बल, ऐश्वर्या, वीर्य, शक्ति और तेज।

प्रश्न 39 : इलाहाबाद शिलालेख के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. यह शिलालेख केवल गद्य में लिखा गया था।
2. हरिसेन ने इस शिलालेख की रचना की थी।
3. इस शिलालेख के रचयिता को संधि-विग्रहिक का पद दिया गया था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 2 सही है : इलाहाबाद शिलालेख गैर-सांप्रदायिक होने के साथ-साथ विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक है। इसकी रचना समुद्रगुप्त के कवि हरिसेन ने की थी।
कथन 3 सही है : इस शिलालेख में जिस प्रकार की उत्कृष्ट शैली और भाषा का प्रयोग किया गया है उससे यह प्रतीत होता है कि लेखक उच्च कोटि का कवि होगा। हरिसेन शांति और युद्ध (संधि-विग्रहिक) के मंत्री थे।
समुद्रगुप्त की प्रशस्ति के लेखक संस्कृत पद्य की तकनीक में कुशल थे।
कथन 1 गलत है : शिलालेख आंशिक रूप से पद्य में और आंशिक रूप से गद्य में है।

प्रश्न 40 : निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. सभी गुप्त राजाओं ने अपने-अपने प्रधान सेनापति नियुक्त किये।
2. देश की सारी भूमि राजा की संपत्ति नहीं थी।
3. राजा अपनी शक्तियों को मंत्रियों और अन्य उच्च अधिकारियों के साथ साझा नहीं करते थे।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

कथन 1 ग़लत है : गुप्त राजाओं को काफी अधिक शक्तियाँ प्राप्त थीं। उन शक्तियों में राजनीतिक, प्रशासनिक, सैन्य और न्यायिक क्षेत्र शामिल थे। अक्सर, वे अपने स्वयं के कमांडर-इन-चीफ होते थे। समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय और स्कंदगुप्त ने स्वयं ही अपनी सेनाओं का नेतृत्व किया।
गुप्त राजाओं ने सभी राज्यपालों के अलावा महत्वपूर्ण सैन्य और नागरिक अधिकारियों की नियुक्ति की। राज्यपालों और उनके अधिकारियों को राजा के नियंत्रण और मार्गदर्शन में काम करना पड़ता था।
इसी प्रकार केन्द्रीय सचिवालय भी राजा की व्यक्तिगत देखरेख में कार्य करता था।
राजा सभी सम्मानों और उपाधियों का स्रोत था।
कथन 2 ग़लत है : देश की सारी ज़मीन राजा की संपत्ति थी जो अपनी इच्छानुसार किसी को भी दे सकता था।
कथन 3 गलत है : यह कहना गलत है कि गुप्त राजा निरंकुश थे। उन्होंने अपनी शक्तियों को मंत्रियों और अन्य उच्च अधिकारियों के साथ साझा किया।
ग्राम पंचायतों और नगर परिषदों जैसे स्थानीय निकायों को काफी अधिक शक्तियाँ सौंपी गईं।
राजा को लोगों की इच्छाओं का सम्मान करके और उनके कल्याण को बढ़ावा देकर उनके बीच लोकप्रियता हासिल करने के लिए सभी उपाय अपनाने की आवश्यकता थी।

प्रश्न 41 : गुप्त काल के दौरान गिल्ड के कार्य के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. उनका अपना संविधान था।

2. इनके सदस्यों को अपने व्यक्तिगत पेशे के चुनाव के लिए अधिक स्वतंत्रता दी गई।
3. गिल्ड व्यवसायियों के संवृत निगम थे।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

गिल्ड व्यापार का एक निगम था, जिसमें कई लोग एक साथ आते थे और सहकारी आधार पर व्यापार करने की दृष्टि से खुद को विशिष्ट नियमों और शर्तों से बाँधते थे।

कथन 1 सही है : इसका अपना संविधान और संगठन था। यह कमोबेश अपने क्षेत्र में एक स्वायत्त इकाई के रूप में कार्य करता था।

कथन 3 ग़लत है : इनके सदस्यों की एकता ही गिल्ड का सार था। गिल्ड मुख्यतः व्यवसायियों के संवृत निगम नहीं थे जो कि केवल एक विशेष व्यवसाय में लगे हुए थे।

कथन 2 सही है : इनके सदस्यों को अपने व्यक्तिगत पेशे के चुनाव के लिए अधिक स्वतंत्रता दी गई थी। वाणिज्यिक गिल्डों के सदस्य न केवल अपने व्यापार में, बल्कि कई अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में भी रुचि रखते थे। विभिन्न गिल्डों के द्वारा सार्वजनिक उपयोगिता के कार्य किये जाते थे।

प्रश्न 42 : गुप्त काल के दौरान मंदिर वास्तुकला के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. यह काल भारत में मंदिर वास्तुकला की शुरुआत का प्रतीक है।
2. गर्भगृह एक हॉल था, जहाँ लोग इकट्ठा हो सकते थे।
3. मंडप, वह स्थान था, जहाँ मुख्य देवता की प्रतिमा रखी जाती थी।

निम्नलिखित कूट में से सही विकल्प का चयन कीजिए :

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (A)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : गुप्त वंश का शासन काल भारतीय मंदिर वास्तुकला की शुरुआत का प्रतीक है। कुछ शुरुआती हिंदू मंदिर भी इसी समय बनाए गए थे। इन मंदिरों में विष्णु, शिव और दुर्गा जैसे देवताओं की पूजा की जाती थी।

कथन 2 गलत है : इन मंदिरों का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा गर्भगृह था, जहाँ मुख्य देवता की प्रतिमा रखी गई थी। यहीं पर पुजारी धार्मिक अनुष्ठान करते थे और भक्त देवता की पूजा करते थे।
कथन 3 गलत है :प्रायः, भीतरगाँव की तरह, इसे एक पवित्र स्थान के रूप में चिह्नित करने के लिए, गर्भगृह के शीर्ष पर एक बुर्ज बनाया गया था, जिसे शिखर के रूप में जाना जाता है। शिखरों के निर्माण के लिए सावधानीपूर्वक योजना की आवश्यकता होती है। अधिकांश मंदिरों में एक अन्य स्थान भी होता था जिसे मंडप के नाम से जाना जाता था। यह एक हॉल था, जहाँ लोग इकट्ठा हो सकते थे।

प्रश्न 43 : गुप्त काल की आर्थिक स्थिति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. लौह एवं इस्पात संयंत्र सुविकसित उद्योग थे।
2. जहाज निर्माण कोई महत्वपूर्ण उद्योग नहीं था।
3. रोमन साम्राज्य के साथ व्यापार किया जाता था।
4. पलमीरा भारतीयों और रोमनों के लिए एक महत्वपूर्ण मिलन स्थल था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : गुप्त शासकों के संरक्षण में अनेक उद्योग अस्तित्व में आये। महरौली में लौह स्तंभ की ढलाई पूरी तरह सुव्यवस्थित लौह और इस्पात संयंत्र के बिना संभव नहीं थी। इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में वर्णित बड़ी संख्या में हथियारों का निर्माण केवल बड़े लोहे के कारखानों में ही किया जा सकता था।
कथन 2 गलत है : गुप्त साम्राज्य ने एक संपन्न जहाज निर्माण उद्योग विकसित किया। गुप्त के जहाज अच्छी तरह से निर्मित और समुद्र में चलने योग्य थे, तथा उनका उपयोग व्यापार और सैन्य दोनों उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
कथन 3 सही है : गुप्त काल के दौरान महत्वपूर्ण बंदरगाह पूर्वी तट पर ताम्रलिप्ति और पश्चिमी तट पर भृगुकच्छ थे। रोमन साम्राज्य की संपत्ति पश्चिमी भारत में कल्याण, चौल, ब्रोच और कैम्बे के बंदरगाहों के माध्यम से भारत पहुँची।
कथन 4 गलत है : ताम्रलिप्ति बंगाल में स्थित एक महत्वपूर्ण बंदरगाह था, यहाँ से चीन, सीलोन, जावा और सुमात्रा के साथ व्यापार किया जाता था। अलेक्जेंड्रिया भारतीयों और रोमनों के लिए एक महत्वपूर्ण मिलन स्थल था।
फारस की खाड़ी और लाल सागर के रास्ते पश्चिमी देशों के साथ व्यापारिक संबंध कायम रहे। भूमि मार्ग पलमायरा और पेट्रा पर एकत्रित हुए।

प्रश्न 44 : गुप्त काल की धार्मिक प्रथा के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. गुप्त काल में राम पंथ लोकप्रिय हुआ।

2. अमरकोष में राम का नाम का उल्लेख देवता के रूप में किया गया है।
3. कुछ गुप्त राजा राम के भक्त थे।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

कथन 1 गलत है : राम पंथ गुप्त काल से पहले ही लोकप्रिय था। रामायण, जो राम पंथ का प्राथमिक स्रोत है, की रचना 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास हुई थी। गुप्त काल के दौरान रामायण एक लोकप्रिय ग्रंथ था, लेकिन इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि इस दौरान राम पंथ लोकप्रिय हुआ।

कथन 2 ग़लत है : अमरकोश एक संस्कृत ज्ञानकोश (थिसारस) है, जिसे 6वीं शताब्दी ईस्वी में अमर सिम्हा द्वारा संकलित किया गया था। इसमें "राम" का नाम तो है, लेकिन इसमें राम को देवता के रूप में वर्णित नहीं किया गया है। अमरकोश में विष्णु, शिव और ब्रह्मा जैसे अन्य हिंदू देवताओं का वर्णन है।

कथन 3 गलत है : इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि कोई भी गुप्त राजा राम का भक्त था। गुप्त राजा आमतौर पर सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु थे, लेकिन उन्होंने राम पंथ के प्रति कोई विशेष पक्षपात नहीं दिखाया।

प्रश्न 45 : गुप्त काल के दौरान धर्मनिरपेक्ष साहित्य के विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. वसुबंधु गैर-धार्मिक रचनाओं के लिए संस्कृत का उपयोग करने वाले पहले ज्ञात लेखक थे।
2. इलाहाबाद प्रशस्ति चम्पू काव्य शैली में लिखी गई थी।
3. गुप्त वंश के शासनकाल के दौरान शाही शिलालेखों की भाषा प्राकृत से संस्कृत हुई।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 ग़लत है : गुप्त काल धर्मनिरपेक्ष साहित्य के निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। अश्वघोष (पहली शताब्दी सीई) गैर-धार्मिक रचनाओं के लिए संस्कृत का उपयोग करने वाले पहले ज्ञात लेखक थे।

कथन 2 सही है : इस काल में संस्कृत साहित्य में गद्य का प्रयोग बढ़ गया था। इलाहाबाद प्रशस्ति गद्य और पद्य की मिश्रित शैली (इस शैली को चम्पू काव्य के नाम से जाना जाता है) में है।
कथन 3 सही है : यही वह काल है जिस काल में शाही शिलालेखों की भाषा प्राकृत से संस्कृत में परिवर्तन का क्रम पूरा हुआ।

प्रश्न 46 : नाट्यशास्त्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए :

a) यह नाटक का सबसे पुराना ज्ञात ग्रंथ है।
b) यह ग्रंथ हमें बताता है कि ब्रह्मा ने नाट्यशास्त्र को पाँचवें वेद के रूप में भरत नामक ऋषि को दिया था।
c) ये सूत्र मौखिक और गद्य दोनों परंपराओं में मौजूद थे।
d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर: (d)
व्याख्या :
नाट्यशास्त्र नाटक का सबसे पुराना ज्ञात ग्रंथ है। नाट्यशास्त्र हमें बताता है कि नाट्य को आनंद देने और दैनिक जीवन की समस्याओं, संघर्षों और दुखों से थके हुए मन को विचलित करने के लिए एक कीड़ा की वस्तु (क्रिडानियाका) के रूप में बनाया गया था। **इसलिए, विकल्प (a) सही है।**
यह ग्रंथ हमें बताता है कि ब्रह्मा ने दुनिया के ध्यान को भटकने से रोकने के लिए पाँचवें वेद के रूप में भरत नामक ऋषि को नाट्यशास्त्र दिया, जो चार वेदों के विपरीत, सभी लोगों के लिए सुलभ था। **इसलिए, विकल्प (b) सही है।**
नाट्यशास्त्र एक समग्र कार्य है, जो पहले की सामग्री के संहिताकरण और संकलन को दर्शाता है। यह प्रारंभ में मौखिक परंपराओं के रूप में और बाद में गद्य सूत्रों के रूप में अस्तित्व में रहा होगा, जिसमें बाद में छंद और टिप्पणियाँ जोड़ी गईं। **इसलिए, विकल्प (c) सही है।**

प्रश्न 47 : गुप्त मंदिर की विशेषता के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. शिकारा गुप्त वास्तुकला की प्रमुख विशेषता थी।
2. भुमरा और नचनाकुटारा के मंदिरों में शिकारे हैं।
3. शुरुआत में बनाए गए मंदिरों की छत सपाट थी, लेकिन बाद में छत पर शिखर खड़े कर दिए गए।
4. 'मंडप' गर्भगृह के सामने होता था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : भारतीय वास्तुकला में गुप्त मंदिर वास्तुकला का एक महत्वपूर्ण योगदान गर्भगृह के ऊपर शिखर का निर्माण है।

कथन 2 गलत है : भुमरा और नचनाकुतारा के पहले के मंदिरों में शिखर नहीं थे, तथा गर्भगृह में केवल सपाट छतें थीं।

कथन 3 सही है : मंदिर ऊँचे चबूतरों पर बनाए गए थे। चबूतरे के चारों तरफ सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। प्रारंभ में निर्मित मंदिरों की छत सपाट थी, लेकिन बाद में छत पर शिखर खड़े कर दिए गए।

कथन 4 सही है : इसमें एक 'गर्भगृह' होता था, जिसमें देवताओं को रखा गया था। गर्भगृह के सामने एक 'मंडप' था। गर्भगृह के चारों ओर एक प्रदक्षिणापथ बनाया गया था। इसके खंभों को फूलों के डिजाइनों से सजाया गया था।

प्रश्न 48 : संगम सोसायटी के पुरातत्व स्रोत के संबंध में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

(पुरातात्विक स्थल)	(विशेषताएँ)
1. ब्रह्मगिरि	राख के टीले
2. कुपगल	महापाषाण
3. बुर्जहोम	गड्ढे वाले आवास
4. आदिच्चनल्लूर	दबाए गए कलश

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

ब्रह्मगिरि, कर्नाटक राज्य के चित्रदुर्ग जिले में स्थित एक महापाषाण (मेगालिथ) पुरातात्विक स्थल है। **इसलिए, युग्म (1) गलत है।**

आदिच्चनल्लूर, तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में स्थित है, जहाँ से अलेक्जेंडर-रे नामक पुरातत्ववेत्ता को दबाए गए कलश के साक्ष्य मिले थे। **इसलिए, युग्म (4) सही है।**

कुपगल कर्नाटक में स्थित है जहाँ से हमें राख के टीलों का साक्ष्य मिलता है। **इसलिए, युग्म (2) ग़लत है।**

बुर्जहोम, जम्मू और कश्मीर में स्थित है, जो नवपाषाण संस्कृति से संबंधित है, जहाँ से मोर्टिमर व्हीलर को महापाषाण संस्कृति का साक्ष्य मिला है। **इसलिए, युग्म (3) सही है।**

प्रश्न 49: निम्नलिखित में से कौन दक्षिण भारतीय महापाषाण (मेगालिथिक) संस्कृति से संबंधित है/हैं?

1. समृद्ध पत्थर के शिलाखंडों का दबना
2. काले एवं लाल बर्तनों का प्रयोग
3. छिद्रित सिक्कों का प्रचलन
4. शहरी बस्तियाँ

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) सभी चार

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृति एक पूर्ण लौह युग की संस्कृति थी, जो 1000 ईसा पूर्व और 400 ईस्वी के बीच विकसित हुई थी। इसकी विशेषता इनकी बड़ी पत्थर की दबी संरचनाएँ, जैसे कि डोलमेंस, समाधि और मेनहिर, मौजूद हैं। ये दबी हुए संरचनाएँ अक्सर पत्थर के शिलाखंड और अन्य कलाकृतियों, जैसे मिट्टी के बर्तन, लौह उपकरण और आभूषणों से समृद्ध होती हैं।

कथन 2 सही है : महापाषाण काल के लोग काले और लाल रंग बर्तनों का भी उपयोग करते थे। इस प्रकार के मिट्टी के बर्तनों की विशेषता इसके काले या लाल बाहरी भाग और इसके लाल आंतरिक भाग हैं। इसका उपयोग खाना पकाने, भंडारण और भोजन परोसने सहित विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जाता था।

कथन 3 गलत है : भारत में छिद्रित सिक्के छठी शताब्दी ईसा पूर्व के दौरान पेश किए गए थे। ऐसा माना जाता है कि इनका विकास महाजनपदों के व्यापारियों द्वारा किया गया था।

कथन 4 ग़लत है : भारत में शहरी बस्तियों का विकास सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2500-1700 ईसा पूर्व) के दौरान शुरू हुआ। लौह युग के दौरान शहरी बस्तियों का विकास जारी रहा, लेकिन वे दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृति की प्रमुख विशेषता नहीं थीं।

प्रश्न 50 : निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. बाणभट्ट हर्ष के दरबार में रहते थे।
2. हर्षचरित बाणभट्ट द्वारा लिखा गया था।
3. हर्ष ने प्राकृत भाषा में 'रत्नावली', प्रियदर्शिका और नागानंद की रचना की।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर: (b)

व्याख्या :

कथन 1 और 2 सही हैं : हर्ष के दरबार में रहने वाले बाणभट्ट द्वारा लिखित हर्षचरित को आम तौर पर उनके समय के दौरान भारत की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डालने के लिए एक ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में मान्यता प्राप्त है।

कथन 3 गलत है : हर्ष स्वयं उच्च कोटि के लेखक थे। संस्कृत में लिखी गई उनकी 'रत्नावली', 'प्रियदर्शिका' और 'नागानंद' नामक तीन बहुमूल्य कृतियाँ उनकी साहित्यिक प्रतिभा के बार में बताती हैं। ये पुस्तकें हर्ष के शासन काल के इतिहास पर भी पर्याप्त रूप से प्रकाश डालती हैं।

प्रश्न 51: प्रयाग विधानसभा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन-I : इस सभा में बुद्ध, सूर्य और शिव की प्रतिमा की पूजा की जाती थी।

कथन-II : सभा यमुना के तट पर आयोजित की गई थी ।

उपर्युक्त के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है।
d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है।

सही उत्तर: (c)

व्याख्या :

कथन 2 सही है: हर्ष ने प्रयाग में एक और सभा (मोक्ष-परिषद) की व्यवस्था की। यह सभा उस रेतीले क्षेत्र में आयोजित की गई थी जहाँ गंगा और यमुना नदियाँ मिलती हैं।
इसमें हर्ष के 18 शाही साथियों और ह्वेन त्सांग ने भाग लिया था।

कथन 1 सही है : जहाँ तक प्रयाग में कार्यवाही का संबंध है, पहले दिन, रेत पर अस्थायी इमारतों में से एक में बुद्ध की एक प्रतिमा स्थापित की गई थी और लोगों के बीच बड़ी संख्या में कपड़े और मूल्यवान सामग्री वितरित किए गए थे। क्रमशः दूसरे और तीसरे दिन, सूर्य और शिव की प्रतिमा की पूजा की गई।

प्रश्न 52 : विश्व इतिहास के संदर्भ में, '*अब्बासिड्स* (अब्बासी) निम्नलिखित में से किसका उल्लेख करता है?

a) समुद्री व्यापार करने वाले व्यापारियों का एक समूह।
b) बगदाद के खलीफा द्वारा संरक्षित विद्वान।
c) खलीफाओं की एक शाखा।
d) गजनी के सुल्तान।

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

मध्य 8वीं शताब्दी के मध्य में गृहयुद्ध की अवधि के बाद, दमिश्क में खलीफा के स्थान पर एक नए राजवंश ने शासन किया, जिसे **अब्बासिड्स (अब्बासियों)** कहा जाता था।

उन्होंने अपनी राजधानी को नए शहर बगदाद में स्थापित की।

अब्बासियों ने अपने को उसी जनजाति से संबंधित होने का दावा किया जिससे पैगंबर मुहम्मद संबंधित थे।

अब्बासियों ने साहित्य, विज्ञान, वास्तुकला, व्यापार, संस्कृति और सहिष्णुता आदि के क्षेत्रों में बहुत सारी उपलब्धियाँ हासिल कीं। इसलिए, विकल्प (c) सही उत्तर है।

प्रश्न 53: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : दक्कन क्षेत्र में, प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में नाद गावुंडा नामक वंशानुगत राजस्व अधिकारियों का उदय हुआ।

कथन II : 800-1000 ईसा पूर्व की अवधि के दौरान शहरी क्षेत्रों में कानून और व्यवस्था कोष्टा पाल द्वारा बनाए रखा गया था।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है।
d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है।

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

प्रारंभिक मध्ययुगीन काल के दक्कन क्षेत्र में नाद गावुंडा या देसा गावुंडा नामक वंशानुगत राजस्व अधिकारियों का उदय हुआ। जिन्होंने महाराष्ट्र में बाद के समय के देशमुखों और देशपांडे के समान कार्यों का निर्वहन किया। जैसे-जैसे इन वंशानुगत लोगों की शक्ति बढ़ती गई, ग्राम समुदाय कमजोर होते गए। **इसलिए**, **कथन 1 सही है** ।

कोष्टा पाल या कोतवाल शहरी क्षेत्रों और उनके आसपास के क्षेत्र में कानून-व्यवस्था बनाए रखते थे। सामान्यतः, नगरों का प्रशासन विभिन्न समितियों द्वारा किया जाता था, जिनमें व्यापार संघों के प्रमुख भी शामिल होते थे। **इसलिए, कथन 2 भी सही है**।

प्रश्न 54 : मध्यकाल के शुरुआत और मध्ययुगीन काल के साहित्य के संदर्भ में, 'अपभ्रंश' शब्द निम्नलिखित में से किसको दर्शाता है ?

a) नाटकों की एक शैली को
b) धर्मशास्त्रों के एक समूह को
c) भाषाओं के एक समूह को

d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

आधुनिक उत्तर भारतीय भाषाओं की अग्रदूत अपभ्रंश प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में बोली जाती थी।
शाही दरबारों द्वारा संरक्षित विद्वानों ने अपभ्रंश में साहित्य का निर्माण किया, जैसे महान कवि स्वयंभू की रचनाएँ, जो शायद राष्ट्रकूट दरबार में रहे होंगे।
अपभ्रंश साहित्य इस काल के बारे में जानकारी का एक मूल्यवान स्रोत हैं।

प्रश्न 55. *'कोटिसर्व'* शब्द निम्नलिखित में से किसको संदर्भित करता है?

a) एक धनी व्यक्ति को
b) दूरी मापने की एक इकाई को
c) सामंती प्रमुख के लिए एक उपाधि को
d) मुख्य शिल्पकार को

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

प्रारंभिक मध्ययुगीन साहित्यिक स्रोतों में मंत्रियों, अधिकारियों, सामंती प्रमुखों और धनी व्यापारियों की शानदार जीवन शैली का वर्णन किया गया है, जो कभी-कभी राजाओं की तरह विलासितापूर्ण जीवन जीते थे। एक उदाहरण चालुक्य राज्य में एक कोटिसर्व, या करोड़पति का है, जिसकी जीवनशैली एक राजा से अनुरूप थी। इसलिए, विकल्प 'a' सही उत्तर है।

प्रश्न 56 : निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

	शब्द	**अर्थ**
1.	*स्मार्त*	अनुष्ठानों का एक समूह
2.	*अनुलोम*	एक प्रकार का विवाह
3.	*अंत्यज*	अछूत

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : प्रारंभिक मध्ययुगीन काल में वर्ण व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस अवधि के दौरान शूद्रों की सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ। हालाँकि, उन्हें वेदों का अध्ययन करने की अनुमति नहीं थी, फिर भी वे जन्म, मृत्यु, नामकरण आदि जैसे ***स्मार्त अनुष्ठानों के लिए पात्र बन गए।***

कथन 2 सही है : उस काल के धर्मशास्त्रों के अनुसार, विभिन्न जातियों के बीच विवाह वर्जित था। फिर भी, उन्हें वर्गीकृत किया गया और उनको नाम दिए गए, जिससे संकेत मिलता है कि यह निश्चित रूप से हुआ था। उच्च जाति के पुरुष और निम्न जाति की महिला के बीच के विवाह को ***अनुलोम*** (मानदंड के अनुसार) विवाह कहा जाता था तथा उच्च जाति की महिला और निम्न जाति के पुरुष के बीच के विवाह को ***प्रतिलोम*** (मानदंड के विरुद्ध) विवाह कहा जाता था।

कथन 3 सही है : प्रारंभिक मध्ययुगीन काल के दौरान, दलितों की सापेक्ष स्थिति शूद्रों से भी बदतर थी। दलितों में मैला ढोने, मृत जानवरों की खाल उतारने, जूते बनाने और शिकारी आदि जैसे पेशे अपनाने वाले लोग शामिल थे। इन लोगों को **अंत्यज** या अछूत कहा जाता था। उन्होंने चार-स्तरीय वर्ण व्यवस्था के बाहर, पाँचवें सामाजिक स्तर का गठन किया।

प्रश्न 57 : शंकराचार्य के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. वे हर्ष का समकालीन थे।
2. उन्होंने द्वैतवाद के सिद्धांत को प्रतिपादित किया।
3. शंकर के अनुसार, हमारे आस-पास की दुनिया वास्तविक है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) सभी तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर :

व्याख्या :

कथन 1 ग़लत है : शंकराचार्य ने हिंदू धर्म के दार्शनिक आधार में सुधार किया। उनका जन्म 9वीं शताब्दी में केरल में हुआ था, जबकि हर्ष का शासन काल 600-650 ई. के बीच का है। हालाँकि, उनका जीवन गुमनामी में बीता है और उनके जीवन के इर्द-गिर्द कई किंवदंतियाँ फैली हुई हैं।

कथन 2 गलत है : शंकर के दर्शन को अद्वैतवाद, या गैर-द्वैतवाद कहा जाता है। यह वेदांत दर्शन का एक अद्वैतवादी सम्प्रदाय है, जो बताता है कि केवल एक ही वास्तविकता है, जो कि ब्रह्म है, और बाकी सब कुछ एक भ्रम (माया) है। शंकर का मानना था कि व्यक्तिगत स्वयं (आत्मान) ब्रह्म के समान है, और जीवन का लक्ष्य इस पहचान को महसूस करने के साथ-साथ जन्म और मृत्यु (संसार) के चक्र से मुक्ति प्राप्त करना है।

कथन 3 ग़लत है : शंकर के अनुसार, हमारे चारों ओर की दुनिया अंतिम अर्थ में वास्तविक नहीं है। उनका मानना था कि दुनिया एक भ्रम या माया है, और एकमात्र वास्तविकता ब्रह्म, सर्वोच्च चेतना है। मुक्ति का

एकमात्र रास्ता ईश्वर की भक्ति है, जो इस वक्तव्य से मजबूत होती है कि ईश्वर और प्राणी एक ही हैं। इस दर्शन को वेदांत भी कहा जाता है।

प्रश्न 58: रामानुज के दर्शन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. उनके अनुसार मोक्ष का मार्ग कर्म, ज्ञान और भक्ति से होकर गुजरता है।
2. ध्यान से जीव को ज्ञान प्राप्त होता है।
3. ध्यान की विशेषता आत्मा में ईश्वर पर निर्भरता के प्रति प्रेम की भावना है।

निम्नलिखित कूट में से सही विकल्प का चयन कीजिए :

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) 1 और 3 दोनों
d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : रामानुज के अनुसार, मोक्ष का मार्ग कर्म, ज्ञान और भक्ति से होकर गुजरता है, बिना किसी स्वार्थ के कर्तव्य का पालन मन को शुद्ध करता है।

कथन 2 सही है : इससे जीव का स्वयं पर ध्यान संभव हो जाता है। ऐसे ध्यान के माध्यम से जीव स्वयं को ईश्वर पर निर्भर होने का ज्ञान प्राप्त करता है। तब वह ईश्वर से प्रेम करने लगता है और उसका चिंतन करने लगता है। भक्ति में ध्यान शामिल है जैसे ज्ञान केवल भक्ति में करता है।

कथन 3 सही है : ध्यान की विशेषता आत्मा में ईश्वर पर निर्भरता के प्रति प्रेम की भावना है। जब भक्ति परिपक्व होकर पूर्ण हो जाती है तब आत्मा को ईश्वर का साक्षात्कार होता है।

प्रश्न 59 : निम्नलिखित में से किसे तमिल साहित्य में महाकाव्य माना जाता है?

a) शिलप्पादिकारम
b) मणिमेखलाई
c) शिवगा सिंदामणि
d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर: (d)

व्याख्या :

शिलप्पादिकारम संगम काल का सबसे प्राचीन और महानतम महाकाव्य था। ऐसा माना जाता है कि यह दूसरी शताब्दी ईस्वी में इलंगो आडिगल (महान चोल राजा करिकाला के पोते) द्वारा लिखा गया था।

इसलिए, विकल्प (a) सही है।

मणिमेकलाई छठी शताब्दी ईस्वी में सीतालाई सतनार द्वारा लिखी गई एक तमिल महाकाव्य कविता है। इसे तमिल साहित्य के पाँच महान महाकाव्यों में से एक माना जाता है, और यह केवल उन तीन में से एक है जो आधुनिक युग में बचे हैं। ***इसलिए, विकल्प (b) सही है।***

शिवगा सिंदामणि, जिसे जीवक चिंतामणि भी कहा जाता है, एक तमिल महाकाव्य है, जो 10वीं शताब्दी की शुरुआत में मदुरै के एक जैन तपस्वी तिरुत्तक्कतेवर द्वारा लिखी गई थी। इसे तमिल साहित्य के पाँच महान महाकाव्यों में से एक माना जाता है। ***इसलिए, विकल्प (c) सही है।***

प्रश्न 60: "शाहनामा" के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: यह फ़िरदौसी द्वारा तुर्की भाषा में लिखा गया था।

कथन II: शाहनामा की रचना महमूद गजनवी के द्वारा करायी गयी थी।

उपर्युक्त के बारे में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।

b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।

c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है

d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

कथन 1 गलत है : शाहनामा, जिसे *शाहनामे के नाम से भी जाना जाता है*, फ़िरदौसी द्वारा लिखित एक फ़ारसी महाकाव्य है। *शाहनामे का* शाब्दिक अर्थ है 'राजाओं की किताब'। फ़िरदौसी महमूद ग़ज़नवी के दरबार में दरबारी कवि था।

कथन 2 सही है : फ़ारसी राष्ट्रीय महाकाव्य शाहनामा की रचना महमूद ग़ज़नवी के द्वारा करायी गयी थी। *शाहनामे* वृहत फ़ारसी क्षेत्र के राजाओं और साम्राज्यों के पौराणिक और ऐतिहासिक अतीत को बताता है। महमूद गजनवी ने न केवल *गाजी भावना* के तहत मध्य एशियाई आदिवासियों से इस्लाम के रक्षक के रूप में काम किया, बल्कि उसका शासनकाल फारसी पुनर्जागरण के लिए भी जाना जाता है।

प्रश्न 61: निम्नलिखित पर विचार कीजिए :

प्रारंभिक मध्ययुगीन राजपूत राज्य	**क्षेत्र**
1. गढ़वाल	कन्नौज
2. कलचुरी	जबलपुर
3. परमार	मालवा
4. तोमर	दिल्ली

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

a) केवल एक

b) केवल दो
c) केवल तीन
d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (d)

गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य के विघटन के साथ ही उत्तर भारत में कई राजपूत राज्य अस्तित्व में आए।
इनमें से सबसे महत्वपूर्ण थे : कन्नौज के गढ़वाल, मालवा के परमार और अजमेर के चौहान।
देश के विभिन्न हिस्सों में अन्य छोटे राजवंश भी थे, जैसे आधुनिक जबलपुर के आसपास के क्षेत्र में कलचुरी, बुंदेलखण्ड में चंदेल, गुजरात के चालुक्य और दिल्ली के तोमर आदि। बंगाल पालों के अधीन रहा और बाद में, सेन के अधीन चल गया।

प्रश्न 62 : 'मामलुक राजवंश' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है:

a) 'मामलुक' शब्द का शाब्दिक अर्थ गुलाम है।
b) यह दिल्ली सल्तनत का पहला राजवंश था।
c) इस राजवंश को इल्बारी राजवंश के नाम से भी जाना जाता है।
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर: (d)

व्याख्या :

मामलुक एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ 'स्वामित्व' है। यह वास्तव में एक गुलाम को दर्शाता था। इसका उपयोग मुख्य रूप से सैन्य सेवाओं के लिए आयातित तुर्की दासों को घरेलू या आर्थिक उद्देश्यों के लिए विनम्र दासों से अलग करने के लिए किया जाता था।
दिल्ली सल्तनत के मामलुक राजवंश की स्थापना गुलाम द्वारा की गई थी। जैसे - कुतुब-उद-दीन ऐबक मुहम्मद गोरी का गुलाम था।
चूँकि, ऐबक एक मामलुक था, अतः हम कह सकते हैं कि यह दिल्ली सल्तनत का पहला राजवंश था। इसके बाद खिलजी और तुगलक वंश का शासन आया।
हालाँकि, इस राजवंश के नौ शासकों में से केवल तीन यानी कुतुब-उद-दीन ऐबक, इल्तुतमिश और बलबन अपने प्रारंभिक जीवन के दौरान गुलाम थे। उन्हें भी संप्रभु शक्तियाँ संभालने से बहुत पहले ही उनके आकाओं द्वारा दासत्व से मुक्त कर दिया गया था।
इसलिए, 'इल्बरी' शब्द को व्यापक मान्यता मिली है, क्योंकि कुतुब-उद-दीन ऐबक को छोड़कर इस राजवंश के सभी शासक तुर्कों की इल्बरी जनजाति के थे। इसलिए, विकल्प (d) सही विकल्प है।

प्रश्न 63. लिंगराज मंदिर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: मंदिर का निर्माण बलुआ पत्थर और लेटेराइट से किया गया है।
कथन II: मंदिर का निर्माण देउल शैली में किया गया है।

उपर्युक्त के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है तथा कथन-II गलत है।
d) कथन-I गलत है तथा कथन-II सही है।

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : लिंगराज मंदिर भुवनेश्वर का सबसे बड़ा मंदिर है। लिंगराज मंदिर बलुआ पत्थर और लेटराइट से बना है और इसका मुख पूर्व की ओर है। मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व में है, जबकि छोटे प्रवेश द्वार उत्तर और दक्षिण दिशा में हैं।

कथन 2 सही है : मंदिर का निर्माण देउल शैली में किया गया है और यह चार घटकों से बना है, इसमें विमान (गर्भगृह वाली संरचना), जगमोहन (सभा हॉल), नटमंदिर (त्यौहार हॉल), और भोग-मंडप (हॉल) प्रसाद के) शामिल घटक है, जो सभी अक्षीय रूप से संरेखित हैं और ऊँचाई के अवरोही क्रम में हैं।

प्रश्न 64 : दिल्ली सल्तनत के 'चहलगानी' शब्द के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. यह सल्तनत प्रशासन में प्रमुख पदों पर आसीन चालीस तुर्की प्रमुखों के एक समूह का प्रतीक था।
2. इल्तुतमिश के बाद चहलगानी अन्य मामलुक सुल्तानों के लिए एक समस्या बन गया।
3. खिलजी वंश के शासनकाल के दौरान इसे बेरहमी से समाप्त कर दिया गया था।

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

a) केवल एक
b) केवल दो
c) केवल तीन
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : दिल्ली सल्तनत की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी। लेकिन उसके शसन व्यवस्था में एक ठोस प्रशासनिक ढाँचे का अभाव था, जिसके बिना दिल्ली सल्तनत के लिए एक मजबूत नींव रखना असंभव था। इसलिए, इल्तुतमिश ने 'तुर्क-ए-चिहालगानी' की स्थापना की। इसमें लगभग चालीस तुर्की अधिकारी थे, जिन्हें सल्तनत प्रशासन के केंद्रीकरण और मानकीकरण की देखरेख के लिए प्रशासन, सेना और प्रांतों में प्रमुख पदों पर नियुक्त किया गया था।

कथन 2 सही है : समय के साथ-साथ, ये अधिकारी बहुत शक्तिशाली हो गए। जब इल्तुतमिश की मृत्यु हुई, तब उन्होंने अपनी शक्ति को बनाए रखने के साथ-साथ बढ़ाने की कोशिश की। एक बड़े राज्य के रूप में कार्य करते हुए, उसने सल्तनत के सिंहासन पर एक कठपुतली को स्थापित करने की माँग की। रजिया

ने उनका बचाव किया, लेकिन वह अधिक समय तक नहीं कर पाई। आख़िरकार चहलगानी ने उन्हें हटा दिया। उन्होंने अपनी स्थिति को संरक्षित करने के लिए निडर होकर एक के बाद एक सुल्तान को हटा दिया।
कथन 3 गलत है : केवल बलबन के आगमन से ही इस साम्राज्य में स्थिरता बन पाई। वह स्वयं चहलगानी का सदस्य था। इसलिए, उसे इस विनाशकारी शक्ति का स्पष्ट अनुभव था। सल्तनत को स्थिरता प्रदान करने के लिए उसने पूरे चहलगानियों को हटा कर दिया। उसने उनमें से कुछ को स्थानांतरित कर दिया, कुछ अन्य को मार डाला और कुछ अन्य को अपने साथ मिला लिया। उसने चहलगानी के सर्वनाश का निरीक्षण किया।

प्रश्न 65 : निम्नलिखित में से किसने फ़ारसी भाषा में '*जौहर' का पहला वर्णन प्रदान किया?*

a) अमीर खुसरो
b) जियाउद्दीन बरनी
c) अबुल फज़ल
d) हसन निज़ामी

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

गुजरात से लौटने पर, अलाउद्दीन को युद्ध में लूट के माल को लेकर मंगोल सैनिकों के विद्रोह का सामना करना पड़ा।
जिसके कारण नरसंहार हुआ, लेकिन दो मंगोल सरदार रणथंभौर भाग गए। रणथंभौर के राजा हमीरदेव ने अलाउद्दीन को यह कहते हुए उनको वापस करने से इनकार कर दिया कि उसे इसके लिए आक्रमण करने की आवश्यकता है।
इस अभियान में अलाउद्दीन के साथ प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो भी थे।
तीन महीने की घेराबंदी के बाद, भयानक जौहर देखने को मिला, जिसमें सभी लोग आखिरी दम तक लड़ने के लिए बाहर आए।
ख़ुसरो ने हमें फ़ारसी में इस जौहर का सजीव वर्णन दिया। ***इसलिए, विकल्प (a) सही उत्तर है।***

प्रश्न 66 : दिल्ली सल्तनत के प्रशासन के बारे में, निम्नलिखित कथनों पर **विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए :**

a) इनमें से अधिकांश अमीर तुर्की या अफगान परिवारों से आए थे, जो भारत में बस गए थे।
b) सल्तनत काल में भारतीय मुसलमानों और हिंदुओं को अधिकारी के रूप में नियुक्त नहीं किया जाता था।
c) वज़ीर-ए-तफ़वीज़ ने केवल शासक की इच्छाओं को पूरा किया।
d) वज़ीर-ए-तनफ़िज़ के पास अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करने के अलावा असीमित शक्तियाँ थीं।

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

- दिल्ली सल्तनत के कुछ सरदार शक्तिशाली थे और वे राज्य की नीतियों को प्रभावित करते थे। कभी-कभी राज्यपाल के रूप में वे विद्रोह कर स्वतंत्र शासक बन जाते थे या फिर दिल्ली की गद्दी पर कब्ज़ा कर लेते थे।
- **विकल्प (a) सही है :** इनमें से अधिकांश अमीर तुर्की या अफगान परिवारों से आए थे, जो भारत में बस गए थे। उनमें से कुछ ऐसे लोग थे, जो पैसे कमाने की तलाश में भारत आए और सुल्तान के लिए काम किया।
- प्रांतों में काम करने वाले अधिकांश अधिकारी, उदाहरण के लिए प्रांतीय गवर्नर और सैन्य कमांडर, कुछ चुनिंदा परिवारों से आते थे।
- **विकल्प (b) गलत है:** अलाउद्दीन खिलजी के शासन काल के बाद भारतीय मुसलमानों और हिंदुओं को भी अधिकारियों के रूप में नियुक्त किया गया था।
- **विकल्प (c और d) गलत है :** मुस्लिम राजनीतिक विचारकों ने यह कहकर इस स्थिति को सामान्य बनाने की कोशिश की कि वज़ीर दो प्रकार के होते थे, जिसमें एक, वज़ीर-ए-तफ़वीज़ होते थे, जिसके पास अपने उत्तराधिकारी को नियुक्त करने के अलावा असीमित शक्तियाँ थीं, और वही दूसरे वज़ीर-ए-तफ़वीज़ होते थे, जिसके पास केवल शासक की इच्छा पूरी की।

प्रश्न 67*. 'राहत' शब्द निम्नलिखित में से किसको संदर्भित करता है?*

a) एक सिंचाई उपकरण
b) राज्य द्वारा निराश्रितों को दिया जाने वाला एक प्रकार का अनुदान
c) सेना में अधिकारियों के लिए एक उपाधि
d) शाही घराने में इस्तेमाल होने वाला एक प्रकार का मिट्टी का बर्तन

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

- कृषि और सिंचाई दो ऐसे क्षेत्र थे, जिनमें तुर्की शासन के आगमन के बाद काफी अधिक तकनीकी परिवर्तन हुए। पहले ***अरघट्टा/अरहट्टा*** में एक पहिया होता था, जिसके पहिये के चारों ओर मिट्टी के बर्तन लगे होते थे।
- इसका उपयोग उथले पानी या खुली सतहों से पानी निकालने के लिए किया जाता था, लेकिन कुओं से नहीं पानी निकालने में इसका प्रयोग नहीं किया गया था।
- इसमें एक तकनीकी अपडेट किया गया, जिसमें पहिये के रिम के चारों ओर लगे मिट्टी के बर्तनों को बर्तनों की एक श्रृंखला से बदल दिया गया, जो कुएँ के जल स्तर तक पहुँचने के लिए पर्याप्त लंबी थी।
- जंजीर खुले सिरे वाली दोहरी रस्सियों से बनी होती थी जिसके बीच में लकड़ी की पट्टियों से बर्तनों को सुरक्षित किया जाता था। यह ***घटियंत्र*** था। **लेकिन, अरघट्टा और अरहट्टा (आधुनिक रहट)** शब्दों का प्रयोग जारी रहा।

प्रश्न 68 : निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. इब्न बतूता ने किताब-ए-रेहला लिखी।

2. यह किताब अरबी भाषा में लिखी गई थी।
3. इस पुस्तक में सल्तनत काल की डाक व्यवस्था के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।

निम्नलिखित कूट में से सही विकल्प का चयन कीजिए :

a) केवल 1 और 2
b) केवल 2 और 3
c) केवल 1 और 3
d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

इब्न बतूता ने किताब-ए-रेहला लिखी।
यह किताब अरबी भाषा में लिखी गई थी।
यह इब्न बतूता का यात्रा वृतांत है।
इस पुस्तक में सल्तनत काल की डाक व्यवस्था के बारे में विस्तृत जानकारी की गई है।
इब्न बतूता मोरक्को के निवासी था। उसने 1333 ई. में मुहम्मद-बिन-तुगलक के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया।

प्रश्न 69: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: भारत में चरखे का सबसे पहला संदर्भ 14 वीं शताब्दी के मध्य में मिलता है।

कथन II: दुनिया में चरखे का सबसे पहला संदर्भ चीन से मिलता है।

उपर्युक्त के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं तथा कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
c) कथन-I सही है और कथन-II गलत है।
d) कथन-I गलत है और कथन-II सही है।

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

इस अवधि के दौरान चरखे के प्रचलन के कारण कपड़े के उत्पादन में सुधार हुआ।

कथन II ग़लत है : आधुनिक इतिहासकार इरफ़ान हबीब के अनुसार, कुछ प्रसिद्ध कवि 12वीं शताब्दी में ईरान में चरखा चलने की पुष्टि करते हैं।

कथन I सही है : भारत में इसका सबसे पहला संदर्भ 14वीं शताब्दी के मध्य में मिलता है। इस प्रकार, यह स्पष्ट रूप से तुर्कों के साथ भारत आया, और 14वीं शताब्दी के मध्य तक सामान्य उपयोग में आ गया। हमें बताया गया है कि हाथ की धुरी से काम करने वाले स्पिनर की तुलना में चरखा अपने सरलतम रूप में स्पिनर की दक्षता को लगभग छह गुना बढ़ा देता है।

प्रश्न 70 : निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. इल्तुतमिश शासनकाल के दौरान, दिल्ली पूर्व में शिक्षा का सबसे बड़ा केंद्र बन गया।
2. इल्तुतमिश के शासनकाल के दौरान दिल्ली "दूसरा बगदाद" बन गया।

निम्नलिखित कूट में से सही विकल्प का चयन कीजिए :

a) केवल 1
b) केवल 2
c) 1 और 2 दोनों
d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है : इल्तुतमिश के शासनकाल के दौरान, दिल्ली पूर्व में शिक्षा का सबसे बड़ा केंद्र बन गया। इल्तुतमिश शिक्षा और संस्कृति का संरक्षक था तथा उसने दिल्ली में कई मदरसों (इस्लामी स्कूल) की स्थापना की। उसने पूरे इस्लामी जगत के विद्वानों को दिल्ली आकर पढ़ाने और अध्ययन करने के लिए आमंत्रित किया।

कथन 2 सही है : नूर-उद-दीन, मोहम्मद औफ़ी, मिन्हाज-उस-सिराज और हसन निज़ामी जैसे महान विद्वान उसके दरबार में इकट्ठे हुए थे। इसी तरह, कई संत, कलाकार और कारीगर भी दिल्ली आये। जिसके परिणाम यह हुआ कि दिल्ली "दूसरा बगदाद" बन गया।

प्रश्न 71: बहमनी सल्तनत के शासन काल में साहित्यिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. फ़ारसी विद्वान ने दक्कनी भाषा को लोकप्रिय बनाया।
2. दक्कनी भाषा उत्तर भारतीय उर्दू से बिल्कुल अलग थी।
3. बहमनी शासकों ने फ़ारसी भाषा को संरक्षण दिया।
4. बहमनी शासक ने फारसी के साथ-साथ कन्नड़ और तेलुगु भाषा को भी संरक्षण दिया।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) सभी चार

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

कथन 1 गलत है: सूफी आंदोलन ने दक्कनी भाषा को लोकप्रिय बनाया जो दक्कन के मुस्लिम शासक वर्ग की भाषा के रूप में उभरी थी।

कथन 2 गलत है: यह उत्तर भारतीय उर्दू की तरह ही सांस्कृतिक विकास था। सूफी संतों और विद्वानों ने दक्कनी व्याकरण भी विकसित किया और शासक वर्ग के लिए दक्कनी में साहित्य का निर्माण किया।

कथन 3 सही है: बहमनी शासकों ने फ़ारसी भाषा भी विकसित की, जिसे शाही संरक्षण प्राप्त था। उन्होंने इस्लामी शिक्षा को दक्कन में अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया।

कथन 4 ग़लत है: बहमनी शासकों ने फ़ारसी और अरबी को संरक्षण दिया जबकि विजयनगर के रायों ने संस्कृत, कन्नड़ और तेलुगु को प्रोत्साहित किया।

प्रश्न 72: बलबन के राजत्व के सिद्धांत के मूल तत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और गलत कथन चुनिए :

a) बलबन के अनुसार, राजसत्ता पृथ्वी पर ईश्वर का उपशासन था।

b) राजाओं की गरिमा भविष्यवक्ता के बराबर थी।

c) राजा ईश्वर की छाया था।

d) राजा की शक्ति का स्रोत केवल ईश्वर के पास था।

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

बलबन के अनुसार राजत्व पृथ्वी पर ईश्वर का उपशासन (नियाबत-ए-खुदाई) था।

अपनी गरिमा में यह पैग़म्बरी के बाद दूसरे स्थान पर था। राजा ईश्वर (ज़िलुल्लाह) की छाया था।

अपनी राजसी जिम्मेदारियों के निर्वहन में, वह हर समय भगवान से प्रेरित और निर्देशित थे।

राजा की शक्ति का स्रोत कुलीनों या प्रजा के पास नहीं, बल्कि केवल ईश्वर के पास था।

उनके कार्य सार्वजनिक जाँच का विषय नहीं हो सकते।

राजसत्ता के लिए बाहरी गरिमा और प्रतिष्ठा को आवश्यक मानकर इस पर जोर दिया गया।

बलबन ने जनता से काफी दूरी बनाये रखी। उन्होंने आम लोगों से बात करने से इनकार कर दिया।

प्रश्न 73: निम्नलिखित पर विचार कीजिए :

1. तारगी खान
2. कुबक
3. इक़बालमंद

निम्नलिखित में से किस मंगोल नेता ने अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान हमला किया था?

a) केवल 1 और 2

b) केवल 2 और 3

c) केवल 1 और 3

d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

चौथा मंगोल आक्रमण 1303 में हुआ, जब अला-उद-दीन चित्तौड़ की घेराबंदी में व्यस्त था। अपने नेता तर्गी के नेतृत्व में 12,000 की मजबूत मंगोल सेना जबरन मार्च करके दिल्ली पहुँची। **विकल्प (1) सही है।**

मंगोलों की गतिविधियाँ इतनी तेज़ थीं कि गवर्नर अपनी टुकड़ियों को दिल्ली भेजने में सक्षम नहीं थे। अला-उद-दीन को सिरी के किले में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ा, जिसे दो महीने तक मंगोलों ने घेर रखा था।

1306 में मंगोल एक बार फिर दिखाई दिए। उन्होंने मुल्तान के पास सिंधु नदी को पार किया और हिमालय की ओर आगे बढ़े।

गाजी मलिक, जिसे 1305 में पंजाब का गवर्नर नियुक्त किया गया था, ने मंगोलों को रोका और उनमें से बड़ी संख्या में मारे गए, 50,000 मंगोलों को बंदी बना लिए गए, जिनमें उनका नेता कुबक भी शामिल था। उसे मार डाला गया और उनके बच्चों और पत्नियों को दास के रूप में बेच दिया गया। **विकल्प (2) सही है।**

अंतिम मंगोल आक्रमण 1307-08 में उनके नेता इकबालमंद के अधीन हुआ था। यह सच है कि उन्होंने सिंधु नदी को पार किया लेकिन वे उसके बाद कोई प्रगति नहीं कर सके। वह अपने अनुयायियों सहित पराजित हुआ और मारा भी गया। **विकल्प (3) सही है।**

प्रश्न 74: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: अलाउद्दीन ने बलबन के राजत्व सिद्धांत को खारिज कर दिया।

कथन II: उन्होंने खुद को यामीन-उल-खिलाफत नासिरी अमीर-उल-मुमानिन बताया।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(a) कथन-**I** और कथन-**II** दोनों सही हैं और कथन-**II** कथन-**I** की सही व्याख्या है।

(b) कथन-**I** और कथन-**II** दोनों सही हैं और कथन-**II** कथन-**I** की सही व्याख्या नहीं है।

(c) कथन-I सही है कथन-II गलत है

(d) कथन-I गलत है कथन-II सही है

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

कथन 1 ग़लत है: अलाउद्दीन खिलजी ने बलबन के राजत्व के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया। बलबन का मानना था कि राजा ईश्वर की छाया होता है और उसे शासन करने का दैवीय अधिकार प्राप्त है। उनका यह भी मानना था कि राजा को कानून से ऊपर होना चाहिए और बिना किसी सवाल के उसकी बात मानी जानी चाहिए। दूसरी ओर, अलाउद्दीन खिलजी का मानना था कि राजा ही सारी शक्ति और अधिकार का

स्रोत है। उनका यह भी मानना था कि राजा को न्यायप्रिय और परोपकारी शासक होना चाहिए और उसे अपनी प्रजा के प्रति जवाबदेह होना चाहिए।

कथन 2 सही है: उसका यह भी मानना था कि समानता का कोई राजत्व नहीं होता। सभी लोगों को या तो उसका सेवक या उसकी प्रजा होना था और उसे देश के प्रशासन में किसी से प्रभावित नहीं होना था। उसने अपने अधिकार को बढ़ाने के लिए खलीफा की मंजूरी लेना आवश्यक नहीं समझा और कोई आश्चर्य नहीं कि उसने खलीफा से अलंकरण के लिए आवेदन नहीं किया। हालाँकि, उन्होंने खुद को यामीन-उल-ख़िलाफ़त नासिरी अमीर-उल-मुमानिन बताया।

प्रश्न 75: निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

अमीर ख़ुसरो की पुस्तकें	**शासनकाल**
1. किरन-उल-सलाउद्दीन	जलाल-उद-दीन खिलजी
2. किरन-उल-सलाउद्दीन	अला-उद-दीन खिलजी
3. नूर सिफिर	कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

अमीर खुसरो की प्रसिद्ध पुस्तकें हैं

- किरन-उल-सलाउद्दीन (बलबन के समय)
- मिफ्ता-उल-फुतेह (जलाल-उद-दीन खिलजी के समय)
- खज़ैन-उल-फ़ुतेह (अलाउद्दीन खिलजी के समय)
- आशिक़ा (खिज्र खान और देवल रानी पर आधारित कहानी)
- नूर सिफिर (कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी के समय)

प्रश्न 76: निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

सल्तनत काल के दौरान विभाग	**संबंधित विभाग**
1. दीवान-ए-अर्ज़	सेना विभाग
2. दीवान-ए-इश्तियाक	पेंशन विभाग
3. दीवान-ए-मुस्तखराज	बकाया विभाग
4. दीवान-ए-कोही	कृषि विभाग

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?
(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

सही उत्तर (d)
व्याख्या :
कथन 1 सही है: दीवान-ए-अर्ज, जिसे युद्ध विभाग या सैन्य विभाग के रूप में भी जाना जाता है, दिल्ली सल्तनत का एक केंद्रीय विभाग था। यह सुल्तान की सेना के प्रशासन और संगठन के लिए जिम्मेदार था। दीवान-ए-अर्ज की स्थापना 13वीं शताब्दी की शुरुआत में ग्यासुद्दीन बलबन ने की थी।
कथन 2 सही है: दीवान-ए-इश्तियाक, जिसे पेंशन विभाग के रूप में भी जाना जाता है, दिल्ली सल्तनत का एक केंद्रीय विभाग था। यह सेवानिवृत्त सैनिकों, सरकारी अधिकारियों और अन्य व्यक्तियों को पेंशन के भुगतान के लिए जिम्मेदार था जो इसके हकदार थे। दीवान-ए-इश्तियाक की स्थापना 14वीं शताब्दी की शुरुआत में फिरोज शाह तुगलक ने की थी।
कथन 3 सही है: दीवान-ए-मुस्तखराज, जिसे बकाया विभाग के रूप में भी जाना जाता है, दिल्ली सल्तनत का एक केंद्रीय विभाग था। यह करदाताओं से बकाया कर और अन्य देय राशि एकत्र करने के लिए जिम्मेदार था। दीवान-ए-मुस्तखराज की स्थापना 14वीं शताब्दी की शुरुआत में अलाउद्दीन खिलजी ने की थी।
कथन 4 सही है: दीवान-ए-कोही, जिसे कृषि विभाग के रूप में भी जाना जाता है, दिल्ली सल्तनत का एक केंद्रीय विभाग था। इसकी स्थापना 14वीं शताब्दी की शुरुआत में मुहम्मद बिन तुगलक ने की थी। दीवान-ए-कोही के प्रमुख को अमीर-ए-कोही के नाम से जाना जाता था।

प्रश्न 77: फ़िरोज़ शाह तुगलक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
कथन I: उनके शासन के दौरान जजिया एक अलग कर बन गया।
कथन II: संगीत, चिकित्सा और गणित पर बड़ी संख्या में पुस्तकों का संस्कृत से फ़ारसी में अनुवाद किया गया।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
(c) कथन-I सही है कथन-II गलत है
(d) कथन-I गलत है कथन-II सही है

सही उत्तर (b)
व्याख्या :

मुहम्मद बिन तुगलक की नीतियों ने कुलीन वर्ग और धर्मशास्त्रियों को समान रूप से नाराज कर दिया था। उसके उत्तराधिकारी फ़िरोज़ ने धर्मशास्त्रियों पर विश्वास हासिल करने की कोशिश की। इसलिए, उसने बड़ी संख्या में धर्मशास्त्रियों को संरक्षण दिया। राज्य के आवश्यक चरित्र को बदले बिना, उसने कुछ सतही परिवर्तन किये जो उनकी पसंद के थे।

कथन 1 सही है: उसने उन प्रथाओं पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की, जिन्हें रूढ़िवादी धर्मशास्त्री गैर-इस्लामिक मानते थे। उदाहरण के लिए उसने उन मुस्लिम संप्रदायों पर अत्याचार किया, जिन्हें धर्मशास्त्री विधर्मी मानते थे। उनके समय में जजिया एक अलग कर बन गया। पहले यह भू-राजस्व यानी खराज का हिस्सा था.

कथन 2 सही है: हालाँकि, फ़िरोज़ ने एक संकीर्ण धार्मिक नीति अपनाई, वह पहला शासक था जिसने हिंदू धार्मिक कार्यों का संस्कृत से फ़ारसी में अनुवाद करने के लिए कदम उठाया। वह हिंदू विचारों और प्रथाओं की बेहतर समझ चाहते थे। अपने अभियानों के दौरान, वह बड़ी संख्या में संस्कृत कृतियों को अनुवाद के लिए वापस लाए। उनके शासनकाल में चिकित्सा, संगीत और गणित पर कई पुस्तकों का अनुवाद भी किया गया।

प्रश्न 78: बहलोल लोधी काल में मसनद प्रणाली थी:

a) बहलोल लोधी के आन्तरिक मंत्री का समूह

b) एक बड़ा मंच जहाँ बहलोल लोधी प्रमुख नेताओं के साथ एक साथ बैठते थे।

c) इक्ता का धारक

d) इक्ता प्रणाली से एकत्रित राजस्व का वितरण।

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

बहलोल लोधी ने स्वयं सिंहासन पर बैठने के बजाय, वास्तव में एक बड़ा मंच "मसनद" बनवाया, जहाँ बहलोल सहित सभी प्रमुख नेता एक साथ बैठते थे। उन्हें मसनन्द कहकर सम्बोधित किया जाता था।
इसकी पुष्टि तारिख-ए-दाउदी से होती है, जिसमें उल्लेख है कि बहलोल ने अपने सभी प्रमुखों और सैनिकों के साथ भाईचारा बनाए रखा।

प्रश्न 79: निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए :

1. पुर्तगालियों का आगमन
2. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना
3. उत्तर भारत पर मुगल शासन की स्थापना
4. तैमूर का आक्रमण

नीचे दिए गए कोड से सही उत्तर चुनिए:

a) 2-4-1-3

b) 2-4-3-1

c) 4-2-1-3

d) 4-2-3-1

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का ने की थी जो पाँच भाइयों के परिवार से थे। हरिहर के राज्याभिषेक की तिथि 1336 ई. मानी जाती है।

दिल्ली सल्तनत की बढ़ती कमज़ोरी ने मध्य एशियाई शासक, तैमूर को 1398 ई. में दिल्ली पर आक्रमण करने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे तुगलक राजाओं को अपनी राजधानी छोड़कर भागना पड़ा और दिल्ली सल्तनत की प्रतिष्ठा को भारी क्षति पहुँची।

1498 ई. में दो जहाजों के साथ वास्को डी गामा का कालीकट में उतरना, जिसमें गुजराती पायलट था, जिन्होंने अफ्रीकी तट से कालीकट तक जहाजों का मार्गदर्शन किया था, भारत में पुर्तगालियों के आगमन का प्रतीक था।

1526 ई. में इब्राहिम लोधी और बाबर के बीच हुए पहले पानीपत युद्ध से भारत में मुगल शासन की शुरुआत हुई।

प्रश्न 80. *ज़ैनुल आबिदीन* के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन *गलत है* :

(a) वह कश्मीर का शासक था।

(b) उसने अपने पूर्ववर्ती सिकंदर शाह की धार्मिक नीति को पलट दिया।

(c) संपूर्ण ' *राजतरंगिणी* ' उनके शासनकाल के दौरान लिखी गई थी।

(d) उन्हें *बड शाह भी कहा जाता था* ।

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

ज़ैनुल आबिदीन, शाह मिरी राजवंश से कश्मीर के 8 $^{वें}$ सुल्तान थे। **विकल्प (a) सही है**।

इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए, शाह मिरी राजवंश के सिकंदर शाह मिरी (लगभग 1389-1413 ई.) के शासनकाल में ब्राह्मणों का तीव्र उत्पीड़न शुरू हुआ।

उसने कई मंदिरों को नष्ट कर दिया और कश्मीर से पलायन शुरू कर दिया। ज़ैनुल आबिदीन (लगभग 1420-70 ई.) के राज्यारोहण के साथ यह स्थिति बदल गई, जिन्होंने ये सभी आदेश रद्द कर दिए थे। **विकल्प (b) सही है.**

उन्होंने उन सभी गैर-मुसलमानों को कश्मीर में वापस लाया जो भाग गए थे। मंदिरों का भी जीर्णोद्धार किया गया।

कल्हण की कश्मीर का इतिहास, **राजतरंगिणी, का** फ़ारसी में अनुवाद किया गया और उसे आज तक लाया गया। **राजतरंगिणी मूलतः 12 $^{वीं}$ शताब्दी में संस्कृत में लिखी गई थी। जोनराजा ने** अपने शासनकाल में **' द्वितीय राजतरंगिणी'** लिखी। **विकल्प (c) गलत है।**

सामाजिक सद्भाव, आर्थिक विकास, कला और शिल्प के विकास आदि को बढ़ावा देने के उनके अथक प्रयासों के कारण, ज़ैनुल आबिदीन को आज भी कश्मीरियों द्वारा बड शाह (महान सुल्तान) कहा जाता है। **विकल्प (d) सही है।**

प्रश्न 81: विजयनगर साम्राज्य की यात्रा करने वाले विदेशी यात्रियों से संबंधित निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए :

1. अब्दुर रज्जाक : अच्युतराय
2. डुआर्टे बारबोसा : देव राय द्वितीय
3. डोमिनिगो पेस : कृष्णदेव राय
4. फर्नाओ नुनिज़ : हरिहर प्रथम

उपर्युक्त में से कितने युग्म सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) सभी चार

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

अब्दुर रज्जाक एक फ़ारसी, तिमुरिड इतिहासकार और विद्वान थे, जिन्होंने फारस के तिमुरिड वंश के शासक शाहरुख के राजदूत के रूप में देव राय द्वितीय के समय विजयनगर साम्राज्य का दौरा किया था। **इसलिए, युग्म (1) गलत है।**

डुआर्टे बारबोसा पुर्तगाली लेखक, रचनाकार और खोजकर्ता थे जिन्होंने अपनी पुस्तक (एन अकाउंट ऑफ कंट्रीज बॉर्डरिंग द इंडियन ओशन एण्ड देयर इन हैबिटेंट्स) में कृष्णदेव राय के अधीन विजयनगर शासन का एक विस्तारपूर्वक विवरण दिया था। **इसलिए, युग्म (2) गलत है।**

डोमिनिगो पेस पुर्तगाली व्यापारी, लेखक और खोजकर्ता थे जिन्होंने भारत का दौरा किया और प्राचीन शहर हम्पी (जो कृष्णदेव राय के अधीन विजयनगर साम्राज्य द्वारा शासित था) के सभी ऐतिहासिक तथ्यों का सबसे विस्तृत विवरण दिया। **इसलिए, युग्म (3) सही है।**

फ़र्नाओ नुनिज़ पुर्तगाली यात्री, इतिहासकार और घोड़ा व्यापारी थे, जिन्होंने अच्युतराय के शासनकाल में भारत का दौरा किया था और जिन्होंने विजयनगर में तीन साल बिताए थे। **इसलिए, युग्म (4) गलत है।**

प्रश्न 82: विजयनगर साम्राज्य के प्रशासनिक कामकाज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. विजयनगर साम्राज्य में एक केंद्रीकृत प्रशासन था।
2. राजा के पास केवल नागरिक और सैन्य शक्ति थी लेकिन कोई न्यायिक शक्ति नहीं थी।

1. किसी मंत्री का पद केवल चयन के आधार पर निहित होता था।
2. विदेशी यात्री के अनुसार यहाँ एक प्रकार का सचिवालय अस्तित्व में था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?
(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) सभी चार

सही उत्तर (b)
व्याख्या :
कथन 1 सही है: विजयनगर साम्राज्य ने धीरे-धीरे अपनी सभी शाखाओं को सावधानीपूर्वक व्यवस्थित करते हुए एक केंद्रीकृत प्रशासन विकसित किया।
कथन 2 ग़लत है: राजा विजयनगर राज्य की समस्त शक्ति का प्रमुख होता था। वह नागरिक, सैन्य और न्यायिक मामलों के विशेषज्ञ थे और अक्सर सामाजिक विवादों को निपटाने के लिए भी हस्तक्षेप करते थे।
कथन 3 गलत है: हालाँकि ब्राह्मण प्रशासन में उच्च पद पर थे और उनका काफी प्रभाव था, मंत्रियों को न केवल रैंक से, बल्कि क्षत्रियों और वैश्यों से भी भर्ती किया जाता था।
कथन 4 सही है: किसी मंत्री का पद कभी-कभी वंशानुगत होता था और कभी-कभी चयन पर निर्भर होता था। अब्दुर रज्जाक और नुनिज़ ने एक प्रकार के सचिवालय के अस्तित्व का उल्लेख किया है।

प्रश्न 83: विजयनगर प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
कथन I: अफ़ाकी/ग़रीब सरदार दक्कन के बाहर से आए नए लोग थे, जिनसे दक्खनी सरदार बहुत नाराज़ थे।
कथन II: विजयनगर साम्राज्य में नायक सैन्य प्रमुख थे जिन्हें राजा द्वारा निश्चित राजस्व के साथ क्षेत्र दिया जाता था।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।
(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।
(c) कथन-I सही है कथन-II गलत है।
(d) कथन-I गलत है कथन-II सही है।

सही उत्तर
व्याख्या : (b)
कथन 1 सही है: अफ़ाकी/ग़रीब सरदार दक्कन के बाहर से आए नए लोग थे, जिनसे दक्खनी सरदार बहुत नाराज़ थे। यह नाराजगी कई कारकों के कारण थी, जिनमें संसाधनों और शक्ति के लिए प्रतिस्पर्धा, सांस्कृतिक

मतभेद और कथित पक्षपात शामिल थे। अफ़ाकी/ग़रीब सरदारों के प्रति दक्खनी सरदारों की नाराजगी के कारण अंततः कई संघर्ष हुए, जिसने बहमनी सल्तनत के पतन में योगदान दिया।

कथन 2 सही है: विजयनगर साम्राज्य के केंद्र नियंत्रित क्षेत्र में, राजा ने सैन्य प्रमुखों को अमरम या 'निश्चित राजस्व वाला क्षेत्र' प्रदान किया। राज्य की सेवा के लिए सैनिकों, घोड़ों और हाथियों की एक निश्चित संख्या बनाए रखने वाले ये मुखिया होते थे, जिन्हें पलैयागर (पालेगर) या नायकशाद भी कहा जाता था। नायकों को केंद्रीय खजाने को एक धनराशि भी देनी पड़ती थी। उन्होंने एक बहुत शक्तिशाली वर्ग का गठन किया और कभी-कभी उन्हें नियंत्रित करना कठिन होता था।

प्रश्न 84: विजयनगर साम्राज्य की सामाजिक संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:

क) निचली जातियों के बीच सामाजिक संरचना को दाएं और बाएं हाथ के पदनामों में विभाजित किया गया था।

ख) वैष्णव को वाममार्गी अंग माना जाता था।

ग) शैव को दक्षिणमार्गी अंग माना जाता था।

घ) दाक्षिणमार्गी जातियाँ मुख्य रूप से कारीगर उत्पादन में शामिल थीं।

सही उत्तर

व्याख्या : a

विजयनगर की सामाजिक संरचना की एक महत्वपूर्ण विशेषता दाएँ और बाएँ हाथ के पदनामों द्वारा निर्दिष्ट निचली जातियों का दोहरा विभाजन था। **तो, विकल्प (a) सही है।**

दाक्षिणमार्गी अंग की जाति के अनुरूप वैष्णव और बाममार्गी अंग की जाति के अनुरूप शैव। **इसलिए, विकल्प (b) और (c) गलत हैं।**

ज्यादातर मामलों में, दाक्षिणमार्गी जातियां मुख्य रूप से कृषि उत्पादन और कृषि वस्तुओं के स्थानीय व्यापार में शामिल थीं, जबकि वाममार्गी अंग की जातियां घुमंतू कारीगर उत्पादन और गैर-कृषि उत्पादों में व्यापक व्यापार में लगी हुई थीं। **इसलिए, विकल्प (d) गलत है।**

प्रश्न 85: मध्यकालीन संस्कृति के संदर्भ में 'रबाब' क्या है?

(a) एक संगीत वाद्ययंत्र

(b) एक प्रकार का भक्ति काव्य

(c) घुमंतू भिक्षुओं का एक संप्रदाय

(d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

गुरु नानक (जिनसे सिख धर्म की शिक्षा ली गई थी) ने भजनों की रचना की और उन्हें गाया, जबकि उनके शिष्य और वफादार परिचारक, मर्दाना, रबाब बजाते थे, जो एक तार वाला वाद्य यंत्र है।

प्रश्न 86: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: भारतीय वास्तुकला में मेहराबों और गुंबदों का व्यापक उपयोग शुरू करने वाले तुर्क पहले व्यक्ति थे।

कथन II: 'मेहराब' और 'गुंबद' की स्थापत्य विशेषताएं अरब आविष्कार हैं।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(**a**) कथन-**I** और कथन-**II** दोनों सही हैं और कथन-**II** कथन-**I** की सही व्याख्या है।

(**b**) कथन-**I** और कथन-**II** दोनों सही हैं और कथन-**II** कथन-**I** की सही व्याख्या नहीं है।

(c) कथन-I सही है कथन-II गलत है।

(d) कथन-I गलत है कथन-II सही है।

सही उत्तर (C)

व्याख्या :

कथन 1 सही है: जब तुर्क पहली बार भारत आए, तो उनके पास फ़ारसी/मध्य एशिया परंपराओं की याद दिलाने वाली इमारतों का निर्माण तुरंत शुरू करने के लिए न तो समय था और न ही कुशल कारीगर। सबसे पहले, उन्होंने कुछ मंदिरों और अन्य मौजूदा इमारतों को मस्जिदों में बदल दिया। सजावट के लिए, उन्होंने फूलों के डिज़ाइन और कुरान की आयतों का इस्तेमाल किया। जल्द ही, तुर्कों ने अपनी इमारतें बनानी शुरू कर दीं। तुर्कों ने अपनी इमारतों में मेहराब और गुम्बद का व्यापक पैमाने पर प्रयोग किया।

कथन II गलत है: मेहराब और गुंबद के बारे में भारतीयों को पहले से जानकारी थी, लेकिन उनका उपयोग बड़े पैमाने पर नहीं किया गया था। न तो मेहराब और न ही गुंबद तुर्की या मुस्लिम आविष्कार था। अरबों ने इन्हें बीजान्टिन साम्राज्य के माध्यम से रोम से उधार लिया, विकसित किया और अपना बना लिया।

प्रश्न 87: सूर साम्राज्य के प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: कई गांवों को एक परगना में समूहीकृत किया गया था।

कथन II: परगना 'शिकदार' नामक अधिकारी के नियंत्रण में था।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(a) कथन-**I** और कथन-**II** दोनों सही हैं और कथन-**II** कथन-**I** की सही व्याख्या है।

(b) कथन-**I** और कथन-**II** दोनों सही हैं और कथन-**II** कथन-**I** की सही व्याख्या नहीं है।

(c) कथन-I सही है कथन-II गलत है**।**

(d) कथन-I गलत है कथन-II सही है**।**

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन I सही है: शेरशाह ने सल्तनत काल से प्रचलित प्रशासनिक प्रभागों में कई बदलाव नहीं किए। एक परगना में कई गाँव शामिल होते थे।

कथन II सही है: परगना शिकदार (जो कानून और व्यवस्था और सामान्य प्रशासन की देखभाल करता था, और मुंसिफ या आमिल जो भूमि राजस्व के संग्रह की देखभाल करता था) के अधीन था। परगना के ऊपर शिकदार-ए-शिकदारन और मुंसिफ-ए-मुंसिफ़न के अधीन शिक या सरकार थी।

प्रश्न 88: इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. वह अहमदनगर के निज़ाम शाही सुल्तान थे।
2. उन्होंने किताब-ए-नौरास नामक पुस्तक की रचना की।
3. उन्होंने महज़रनामा जारी किया।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

कथन 1 गलत है: इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय बीजापुर राज्य के सिंहासन पर अली आदिल शाह का उत्तराधिकारी था। वह नौ वर्ष की उम्र में राजगद्दी पर बैठे।

कथन 2 सही है: इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय को संगीत में गहरी रुचि थी और उन्होंने किताब-ए-नौरास नामक एक पुस्तक की रचना की थी जिसमें गाने विभिन्न संगीत भाव या रागों में सेट किए गए थे। उन्होंने यह पुस्तक संगीत की देवी **देवी सरस्वती** को समर्पित की। उन्होंने नौरसपुर नामक एक नई राजधानी भी बनाई।

कथन 3 गलत है: महजरनामा अकबर द्वारा जारी किया गया था। इसके अनुसार, यदि कुछ मुद्दों पर धर्मशास्त्रियों के बीच असहमति होती, तो उसे विभिन्न मतों में से चुनने का अधिकार था। महजरनामा पर उस समय के प्रमुख धर्मशास्त्रियों द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे और इसे गलती से 'अचूकता का सिद्धांत' कहा गया है।

प्रश्न 89: शाहजहाँ की दक्कन नीति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और सही विकल्प चुनिए:

a) शाहजहाँ मुगल सीमाओं को खानदेश से आगे बढ़ाना चाहता था।
b) अहमदनगर के मलिक अम्बर ने विद्रोही खान जहाँ लोधी को शरण दी थी।

ग) शाहजहाँ की सुन्नी रूढ़िवादिता उसके और शिया दक्कन सुल्तानों के बीच तनाव का एक स्रोत थी।
घ) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (D)

व्याख्या :

अहमदनगर का निज़ाम शाही साम्राज्य बुरी तरह से विघटित हो गया था, जिससे शाहजहाँ को उस पर हमला करने का अवसर मिला, इसके अलावा उसकी दक्कन नीति के अन्य कारक या उद्देश्य भी थे:

शाहजहाँ अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से निर्देशित था और वह मुगल सीमाओं को खानदेश से आगे बढ़ाना चाहता था। **इसलिए, विकल्प (a) सही है।**

अहमदनगर के मलिक अंबर ने विद्रोही खान जहान लोधी को शरण दी थी और इससे प्रांत को जीतने की उनकी महत्वाकांक्षा पैदा हुई। **इसलिए, विकल्प (b) सही है।**

शाहजहाँ एक रूढ़िवादी सुन्नी मुस्लिम था और उसे दक्कन के सुल्तान की शिया पसंद नहीं थी और उसे फारस के शिया शासकों के साथ दक्कन राज्य के संबंध पर भी संदेह था, जो मुगलों के वंशानुगत प्रतिद्वंद्वी थे। **इसलिए, विकल्प (c) सही है।**

इसके अलावा, वह दक्षिण में स्वतंत्र राजनीतिक सल्तनतों के अस्तित्व को बर्दाश्त नहीं कर सका। इसलिए, उन्होंने दक्षिण में एक सशक्त नीति लागू की।

प्रश्न 90: मुगल अहमदनगर संधि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. जहाँगीर ने संधि की पुष्टि के लिए शाहजहाँ को फरज़ंद की उपाधि भी प्रदान की थी।
2. आदिल शाह ने उन सभी क्षेत्रों को बहाल कर दिया, जिन्हें मलिक अंबर ने जब्त कर लिया था।
3. शहजादा खुर्रम मनसब को बढ़ाकर 30,000 जात और 20,000 सवार कर दिया गया।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 2 सही: वर्ष 1616 में, राजकुमार खुर्रम को कमान सौंपी गई थी। उन्होंने मलिक अंबर को शांति की शर्तें पेश कीं और मलिक ने उसे स्वीकार कर लिया। आदिल शाह ने राजकुमार खुर्रम को 15 लाख के उपहार दिए और मलिक अंबर द्वारा जब्त किए गए सभी क्षेत्रों को बहाल करने का भी वादा किया।

कथन 1 और 3 सही हैं: जहाँगीर ने संधि की पुष्टि के लिए आदिल शाह को फरज़ंद की उपाधि भी प्रदान की थी। शहजादा खुर्रम को शाहजहाँ की उपाधि दी गई और उसका मनसब बढ़ाकर 30,000 जात और 20,000 सवार कर दिया गया। बहुत ख़ुशियाँ मनाई गईं लेकिन तथ्य यह है कि अहमदनगर पर विजय नहीं

मिली और मलिक अंबर की शक्ति को कुचला नहीं गया। यह स्थिति वर्ष 1629 (जब मलिक अंबर की मृत्यु हो गई) तक जारी रही।

प्रश्न 91: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. औरंगजेब ने सिक्कों पर कालिमा के प्रयोग पर रोक लगा दी।
2. उसने नौरोज़ को समाप्त कर दिया।
3. उसने लोगों के आचरण की देखभाल के लिए मुहतसिबों या सार्वजनिक नैतिकता के सेंसरों को नियुक्त किया।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (c)

कथन 1 सही है: औरंगजेब ने सिक्कों पर कालिमा के उपयोग पर रोक लगा दी ताकि गैर-मुसलमानों द्वारा इसे छुआ न जा सके।
कथन 2 सही है: उन्होंने नौरोज़ को समाप्त कर दिया जो फारस से उधार ली गई संस्था थी।
कथन 3 सही है: उन्होंने लोगों के आचरण की देखभाल करने और यह देखने के लिए मुहतसिब या सार्वजनिक नैतिकता के सेंसर नियुक्त किए कि वे कुरान में कही गई बातों के अनुसार कार्य करें।
उन्हें शराब, नशीली दवाओं और पवित्र कुरान द्वारा निषिद्ध अन्य चीजों के उपयोग को रोकना था।
औरंगजेब ने मस्जिदों और खानकाहों की मरम्मत का आदेश दिया, इमामों और मुअज्जिमों को नियमित रूप से भुगतान किया गया।

प्रश्न 92: निम्नलिखित में से किस विदेशी यात्री ने मुगल साम्राज्य का दौरा किया था?

(a) राल्फ फिच
(b) बर्नियर
(c) मोनसेरेट
(d) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

राल्फ फिच लंदन के एक व्यापारी थे, जिन्होंने 16वीं शताब्दी के दौरान भारत की यात्रा की और इंग्लैंड लौटने पर एक यात्रा वृत्तांत लिखा। उन्होंने आगरा और फ़तेहपुर सीकरी को लंदन से भी बड़ा बताया था।
तो, विकल्प (a) सही है।

फ्रेंकोइस बर्नेयर एक फ्रांसीसी चिकित्सक और यात्री थे। कुछ समय के लिए वह दारा शिकोह का मुख्य चिकित्सक था। उन्होंने **'ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर'** भी लिखा। भारत और भारतीयों के बारे में उनका विस्तृत विवरण औपनिवेशिक यूरोपीय लोगों के बीच एक स्रोत सामग्री थी। **तो, विकल्प (b) सही है।**
मोनसेरेट एक पाखंडी पादरी थे जिन्हें पुर्तगालियों ने अकबर के इबादत खाने में बहस करने के लिए भेजा था। उसे सम्राट को कैथोलिक धर्म में परिवर्तित करने की बड़ी उम्मीदें थीं। **तो, विकल्प (c) भी सही है।**

प्रश्न 93: 'दोहरा गुंबद' (double dome) की वास्तुशिल्प अवधारणा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. यह अंदर एक छोटे गुंबद के साथ एक बड़ा गुंबद बनाने की सुविधा देता है।
2. 'ताजमहल' मुगल वास्तुकला में दोहरे गुंबद के उपयोग का पहला उदाहरण था।
3. मुगलों को इस वास्तुशिल्प अवधारणा को भारतीय वास्तुकला में पेश करना था।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) कोई भी नहीं

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है। 'दोहरा गुंबद' की स्थापत्य विशेषता 'मेहराब' और 'गुंबद' के विचार का अगला चरण थी। 'दोहरा गुंबद' ने अंदर एक छोटे गुंबद के साथ एक बड़ा गुंबद बनाने की सुविधा प्रदान की। अंदर का छोटा गुंबद वास्तुकला की स्थिरता के लिए था और बाहरी बड़ा गुंबद भव्य प्रभाव पैदा करने के लिए था।
कथन 2 ग़लत है। मुग़ल स्थापत्य परंपरा में, हुमायूँ का मकबरा दोहरे गुंबद के उपयोग का पहला उदाहरण था। इसका गुंबद संगमरमर से ढका हुआ था। इसे ताज का पूर्ववर्ती माना जा सकता है।
कथन 3 ग़लत है। दोहरा गुंबद की दिशा में प्रयास लोधी राजवंश के तहत दिल्ली में ताज खान (1501 ई.) के मकबरे और सिकंदर लोदी (1518 ई.) के मकबरे से शुरू हुए। हालाँकि, दोहरे गुंबद का पूर्ण परिपक्व रूप भारत में पहली बार हुमायूँ के मकबरे में देखा जाता है।

प्रश्न 94: मध्ययुगीन प्रशासन के संदर्भ में 'अबवाब' शब्द निम्नलिखित में से किसको संदर्भित करता है?

a) अनेक उपकर
b) एक प्रकार का भूमि अनुदान
c) शाही अधिकारी के लिए एक प्रकार का हुक्म
d) भूमि पर कर

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

अब्वाब कई उपकर थे जिन्हें शरिया द्वारा स्वीकृत नहीं किया गया था और इसलिए उन्हें अवैध माना जाता था।

शरिया के तहत सिर्फ चार तरह के कर (जकात, खराज, खम्स और जजिया) की इजाजत है।

अब्वाब ज़वाबित से कुछ हद तक मिलते-जुलते थे, ये नियम शरिया के तहत स्वीकृत नहीं थे।

अलाउद्दीन खिलजी द्वारा थोपे गए घरी और चराई तथा फिरोज शाह द्वारा थोपे गए हक-ए-शर्ब को अब्वाब के प्रकार माना जा सकता है।

औरंगजेब को सभी प्रकार के अबवाबों को समाप्त करके राजस्व का एक बड़ा हिस्सा छोड़ना पड़ा।

प्रश्न 95: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I: औरंगजेब ने "शिकस्त" और "नस्तालिक" को बड़ी कुशलता से लिखा।

कथन II: फतवा-ए-आलमगिरी उनके काल में लिखा गया था।

उपर्युक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(a) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या है।

(b) कथन-I और कथन-II दोनों सही हैं और कथन-II कथन-I की सही व्याख्या नहीं है।

(c) कथन-I सही है कथन-II गलत है।

(d) कथन-I गलत है कथन-II सही है।

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

कथन 1 सही है: औरंगजेब शिकस्त और नस्तालिक दोनों लिपियों में एक कुशल सुलेखक था। उन्हें विशेष रूप से शिकस्त लिपि का शौक था, जो फ़ारसी सुलेख की एक घसीट शैली है जो अपनी बहती रेखाओं और जटिल संयुक्ताक्षरों के लिए जानी जाती है। औरंगजेब की शिकस्त सुलेख की विशेषता इसकी सुंदरता, सटीकता और गति है। नस्तालिक सुलेख में औरंगजेब का कौशल उसके जीवित कार्यों में भी स्पष्ट है। नस्तालिक फ़ारसी सुलेख की एक अधिक औपचारिक शैली है जिसका उपयोग अक्सर धार्मिक और साहित्यिक ग्रंथों के लिए किया जाता है। औरंगजेब की नस्तालिक सुलेख की विशेषता इसकी स्पष्टता, सुपाठ्यता और संतुलन है।

कथन 2 सही है: फतवा-ए-आलमगिरी औरंगजेब के काल में लिखा गया था। यह हनफ़ी न्यायशास्त्र स्कूल पर आधारित इस्लामी कानून का संकलन है। इसे शेख निज़ाम बुरहानपुरी की देखरेख में संकलित किया गया था। फतवा-ए-आलमगिरी वर्ष 1668 में पूरा हुआ और वर्ष 1670 में औरंगजेब को प्रस्तुत किया गया।

प्रश्न 96: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और गलत कथन चुनिए:

a) अकबर ने ज़मीनबोस की प्रथा शुरू की।

b) अकबर को इमामी-ए-आदिल, अमीर-उल-मोमिनीन और मुजतहिद-ए-आला घोषित किया गया।

c) भारत में मुगल सम्राट खलीफा को एक श्रेष्ठ अधिपति के रूप में मान्यता देते थे।

d) बाबर और हुमायूँ ने पादशाह की उपाधि धारण की

सही उत्तर (c)

व्याख्या :

भारत में मुगल बादशाह किसी भी खलीफा को श्रेष्ठ अधिपति के रूप में मान्यता नहीं देते थे। ऐसा इसलिए था क्योंकि वे स्वयं को अपने साम्राज्य में सर्वोच्च अधिकारी के रूप में देखते थे और किसी भी उच्च अधिकारी को स्वीकार नहीं करना चाहते थे। मुगल बादशाह भी जानते थे कि खलीफा एक धार्मिक व्यक्ति था और वे धार्मिक विवादों में नहीं पड़ना चाहते थे। खलीफा को मान्यता देने से इनकार करके, वे अपनी धार्मिक स्वायत्तता बनाए रख सकते थे। खलीफा को मान्यता न देने की यह नीति सबसे पहले तीसरे मुगल सम्राट अकबर द्वारा स्थापित की गई थी। **तो, विकल्प (c) गलत है।**

अकबर के नाम पर खुतबा पढ़ा गया। उन्होंने सिजदा या ज़मीन पर साष्टांग प्रणाम करने और ज़मीनबोस या शाही सिंहासन के सामने ज़मीन चूमने की प्रथा भी शुरू की। **तो, विकल्प (a) सही है।**

वर्ष 1579 में अकबर को इमामी-ए-आदिल, अमीर-उल-मोमिनीन और मुजतहिद-ए-आला घोषित किया गया। अकबर के वंशज भी स्वयं को पूर्ण संप्रभु मानते थे और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी की श्रेष्ठता को नहीं मानते थे। **तो, विकल्प (b) सही है।**

बाबर और हुमायूँ ने पादशाह की उपाधि धारण की और वे दुनिया में किसी भी श्रेष्ठ को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। **तो, विकल्प (d) सही है।**

प्रश्न 97: मुगलों के अधीन प्रांतीय प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. मुगलों के सूबेदार के पास केवल सैन्य अधिकार था।
2. मुगलकाल में सूबेदार का पद वंशानुगत था।
3 मुगल काल के दौरान फौजदार प्रांतीय सैनिकों के कमांडर थे।
4. फौजदारों की नियुक्ति और बर्खास्तगी मुगल सम्राट के हाथों में थी।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) सभी चार

सही उत्तर (a)

व्याख्या :

कथन 1 गलत है: सूबेदार के पास नागरिक और सैन्य दोनों अधिकार थे। वह प्रान्त में राजा का प्रतिनिधि होता था। उन्होंने अपना दरबार तो जमाया लेकिन झरोखे में नहीं बैठ सके। वह सम्राट की अनुमति के बिना युद्ध की घोषणा नहीं कर सकता था या शांति स्थापित नहीं कर सकता था।

कथन 2 गलत है: मुगल काल के दौरान सूबेदार का पद वंशानुगत नहीं था। सूबेदारों की नियुक्ति मुगल बादशाह द्वारा की जाती थी और वे उसकी इच्छानुसार सेवा करते थे। दो या तीन वर्षों के अंतराल पर सूबेदारों का स्थानांतरण कर दिया जाता था। यह डर था कि यदि वे लंबे समय तक एक ही स्थान पर काम करते रहे, तो वे अपनी शक्तियों का दुरुपयोग कर सकते हैं या स्वतंत्र हो सकते हैं।

कथन 3 सही है: फौजदारों को सूबेदार की मदद के लिए नियुक्त किया गया था। उन्हें प्रांत के महत्वपूर्ण उपविभागों का प्रभारी बनाया गया। वे प्रांतीय सैनिकों के कमांडर थे।

कथन 4 गलत है: फौजदार की नियुक्ति और बर्खास्तगी सूबेदार के हाथों में थी। उन्होंने सूबेदार को देश में कानून व्यवस्था बनाए रखने और विद्रोही जमींदारों को दंडित करने में मदद की। उन्हें राजस्व संग्रह के काम में अमिलों की मदद भी करनी थी।

प्रश्न 98: हुमायूं का मकबरा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

1. यह अकबर के शासनकाल के दौरान पूरा हुआ था।
2. इस मकबरे में रंगीन टाइल्स और संगमरमर का उपयोग किया गया था।
1. इसका निर्माण महम अनागा की देखरेख में किया गया था।
2. यह भारत में दोहरा गुंबद "(डबल-डोम)" का सबसे पहला उदाहरण है।

उपर्युक्त में से कितने कथन सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीन
(d) सभी चार

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

कथन 1 सही है: अकबर को वास्तुकला के क्षेत्र में बहुत रुचि थी। हुमायूं का मकबरा वर्ष 1565 में बनकर तैयार हुआ था।

कथन 2 गलत है: इसमें मुख्य भवन के चारों कोणों पर चार मीनारें हैं। इसमें कोई रंगीन टाइल्स नहीं है और इसके निर्माण में संगमरमर का उपयोग किया गया है।

कथन 3 गलत है: दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा अकबर की सौतेली माँ हाजी बेगम की देखरेख में बनाया गया था। यह इमारत फ़ारसी शैली की है।

कथन 4 सही है: यह भारत में "डबल-डोम" का सबसे पहला उदाहरण है, जिसकी ऊंची टोंटी (जो समरकंद में तैमूर और बीबी खानम के मकबरे जैसा निर्माण का एक रूप है) पर थोड़ी मोटी रूपरेखा है।

प्रश्न 99: मुगल काल के दौरान समाज के संदर्भ में, 'तल्लुका' शब्द निम्नलिखित में से किसको संदर्भित करता है?

a) एक अधिकारी को आवंटित राजस्व मंडल

b) किसी क्षेत्र से भू-राजस्व एकत्र करने का जमींदार का अधिकार
c) धार्मिक देवताओं को कर-मुक्त भूमि अनुदान
d) एक बसा हुआ गाँव

सही उत्तर (b)

व्याख्या :

मुगल काल में जमींदार एक शक्तिशाली वर्ग था। यह एक विषम वर्ग था। उनमें से कई के पास व्यक्तिगत स्वामित्व और खेती के तहत भूमि के बड़े हिस्से थे।

ज़मीन (जिस पर उनका स्वामित्व था और जिस पर खेती की जाती थी) के अलावा, जमींदारों के एक बड़े हिस्से के पास कई गाँवों से भू-राजस्व इकट्ठा करने का वंशानुगत अधिकार था।

इसे उनका तल्लुक़ा या उनकी ज़मींदारी कहा जाता था। भू-राजस्व एकत्र करने के लिए, जमींदारों को भू-राजस्व का एक हिस्सा मिलता था जो कुछ क्षेत्रों में 25 प्रतिशत तक जा सकता था।

जमींदार अपनी जमींदारी में शामिल सभी जमीनों का मालिक नहीं था। जब तक किसान-किसान भू-राजस्व का भुगतान नहीं करते, तब तक उनका निपटान नहीं किया जा सकता था।

प्रश्न 100: निम्नलिखित में से कौन अकबर के शासनकाल के दौरान वास्तुकला का प्रमुख तत्व था?

क) निर्माण सामग्री के रूप में लाल बलुआ पत्थर का उपयोग।
बी) धरणिक (ट्रैबीटेड) निर्माण का उपयोग
ग) इस्तेमाल किया गया गुंबद "लोदी" प्रकार का था।
घ) उपर्युक्त सभी

सही उत्तर (d)

व्याख्या :

लाल बलुआ पत्थर अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल वास्तुकला में उपयोग की जाने वाली प्राथमिक निर्माण सामग्री थी। इस अवधि के दौरान लाल बलुआ पत्थर से निर्मित मुगल वास्तुकला के कुछ सबसे प्रसिद्ध उदाहरणों में फतेहपुर सीकरी में बुलंद दरवाजा, आगरा का किला और दिल्ली में जामा मस्जिद शामिल हैं।

इसलिए, विकल्प (a) सही है।

धरणिक (ट्रैबीटेड) निर्माण एक प्रकार का निर्माण है जो किसी इमारत के वजन को थामने के लिए क्षैतिज बीम का उपयोग करता है। यह अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल वास्तुकला में इस्तेमाल की जाने वाली एक सामान्य तकनीक थी। मुगल वास्तुकला के कुछ सबसे प्रसिद्ध उदाहरण जिनमें ट्रैबीटेड निर्माण का उपयोग किया गया है उनमें फ़तेहपुर सीकरी में पंच महल और फ़तेहपुर सीकरी में सलीम चिश्ती का मकबरा शामिल हैं। **इसलिए, विकल्प (b) सही है।**

इस्तेमाल किया गया गुंबद "लोदी" प्रकार का था: लोदी गुंबद एक प्रकार का गुंबद है जो इसकी दोहरी वक्रता और कमल के आकार के पंख की विशेषता है। यह अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल वास्तुकला में इस्तेमाल किया जाने वाला एक सामान्य प्रकार का गुंबद था। लोदी गुंबदों का उपयोग करने

वाले मुगल वास्तुकला के कुछ सबसे प्रसिद्ध उदाहरणों में दिल्ली में हुमायूं का मकबरा और सिकंदरा में अकबर का मकबरा शामिल हैं। **इसलिए, विकल्प (c) सही है।**